कक्षा 7 वीं हिन्दी

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया	सीखने की संप्राप्ति (Learning Outcomes)
सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें – ➢ अपनी भाषा में बातचीत–चर्चा करने के अवसर हों। ➢ प्रयोग की जाने वाली भाषा की बारीकियों पर चर्चा के अवसर हों। ➢ समूह में कार्य करने और एक–दूसरे के कार्यों पर चर्चा करने, राय लेने–देने, प्रश्न करने की स्वतंत्रता हो। ➢ हिन्दी के साथ–साथ अपनी भाषा की सामग्री पढ़ने–लिखने (ब्रेल / सांकेतिक रूप में भी) और उन पर बातचीत की आजादी हो। ➢ अपने परिवेश, समय और समाज से संबंधित रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों। ➢ अपनी भाषा गढ़ते हुए लिखने संबंधी गतिविधियाँ हों; जैसे–शब्द खेल, अनौपचारिक पत्र, तुकबंदियाँ, पहेलियाँ, संस्मरण आदि। ➢ सक्रिय और जागरूक बनाने वाली रचनाएँ, अखबार, पत्रिकाएँ, फिल्म और अन्य ऑडियो–वीडियो सामग्री को देखने, सुनने, पढ़ने और लिखकर अभिव्यक्त करने की गतिविधियाँ हों। ➢ कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों ; जैसे–अभिनय, रोल–प्ले, कविता, पाठ, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों और उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट लेखन और रिपोर्ट लेखन के अवसर हों। ➢ विद्यालय / विभाग / कक्षा की पत्रिका / भित्ति पत्रिका निकालने के लिए प्रोत्साहन हो।	बच्चे– 1. विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़कर समूह में चर्चा करते हैं। 2. किसी सामग्री को पढ़ते हुए लेखक द्वारा रचना के परिप्रेक्ष्य में कहे गए विचार को समझकर और अपने अनुभवों के साथ उसकी संगति, सहमति या असहमति के संदर्भ में अपने विचार अभिव्यक्त करते हैं। 3. किसी चित्र या दृश्य को देखने के अनुभव को अपने ढंग से मौखिक, / सांकेतिक भाषा में व्यक्त करते हैं। 4. पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते परिचर्चा करते हैं। 5. अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतो के बारे में चर्चा करते हैं और उनकी सराहना करते हैं। 6. विविध कलाओं जैसे–हस्तकला, वास्तुकला, खेती–बाड़ी, नृत्यकला और इनमें प्रयोग होने वाली भाषा के बारे में जिज्ञासा व्यक्त करते है, उन्हें समझने का प्रयास करते हैं। 7. विभिन्न संवेदनशील मुद्दों / विषयों; जैसे–जाति, धर्म, रंग, जेंडर, रीति–रिवाजों के बारे में मौखिक रूप में अपनी तार्किक समझ अभिव्यक्त करते हैं। 8. सरसरी तौर पर किसी पाठ्यवस्तु को पढ़कर उसकी उपयोगिता के बारे में बताते हैं। 9. किसी पाठ्यवस्तु की बारीकी से जाँच करते हुए उसमें किसी विशेष बिंदु को खोजते हैं। 10. पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं। 11. विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों के अर्थ समझते हुए उनकी सराहना करते हैं। 12. कहानी, कविता आदि पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों को पहचानते हैं; जैसे–वर्णनात्मक, विवरणात्मक, भावात्मक, प्रकृति चित्रण आदि। 13. किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने के दौरान समझने

	के लिए जरूरत पड़ने पर अपने किसी सहपाठी या शिक्षक की मदद लेकर उपयुक्त संदर्भ सामग्री; जैसे– शब्दकोश, मानचित्र, इंटरनेट या अन्य पुस्तकों की मदद लेते हैं। 14. विविध कलाओं; जैसे– हस्तकला, वास्तुकला, खेती–बाड़ी, नृत्यकला आदि से जुड़ी सामग्री में प्रयुक्त भाषा के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हुए उसकी सराहना करते हैं। 15. भाषा की बारीकियों / व्यवस्था तथा नए शब्दों का प्रयोग करते हैं; जैसे– किसी कविता में प्रयुक्त शब्द विशेष, पदबंध का प्रयोग–आप बढ़ते हैं तो बढ़ते ही चले जाते हैं या जल–रेल जैसे प्रयोग। 16. विभिन्न अवसरों / संदर्भो में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं; जैसे – अपने गाँव की चौपाल की बातचीत या अपने मोहल्ले के लिए तरह तरह के कार्य करने वालों की बातचीत। 17. हिन्दी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र–पत्रिका, कहानी, जानकारीपरक सामग्री, इंटरनेट प्रकाशित होने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद–नापसंद के पक्ष में लिखित या ब्रेल भाषा में अपने तर्क रखते हैं। 18. अपने अनुभवों को अपनी भाषा शैली में लिखते है। 19. विभिन्न विषयों और उद्देश्यों के लिए लिखते समय उपयुक्त शब्दों, वाक्य संरचनाओं, मुहावरों, लोकोक्तियों, विराम–चिह्नों एवं अन्य व्याकरणिक इकाइयों (जैसे– काल, क्रिया विशेषण, शब्द–युग्म आदि का प्रयोग करते हैं। 20. विभिन्न संवेदनशील मुद्दों / विषयों; जैसे– जाति, धर्म, रंग,जेंडर, रीति–रिवाजों के बारे में लिखित रूप से तार्किक समझ अभिव्यक्त करते हैं। 21. भित्ति पत्रिका / पत्रिका आदि के लिए तरह–तरह की सामग्री जुटाते हैं, लिखते हैं और उसका संपादन करते है।

कक्षा आठ (हिन्दी)

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया	सीखने की संप्राप्ति (Learning Outcomes)
सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें :– • अपनी भाषा में बातचीत, चर्चा तथा विश्लेषण करने के अवसर हों। • जीवन से जोड़कर विषय को समझने के अवसर हों। • प्रयोग की जाने वाली भाषा की बारीकियों पर चर्चा के अवसर हों। • समूह में कार्य करने और एक–दूसरे के कार्यों पर चर्चा करने, राय लेने–देने प्रश्न करने की स्वतंत्रता हो। • हिन्दी के साथ–साथ अपनी भाषा की सामग्री पढ़ने–लिखने (ब्रेल/सांकेतिक रूप में भी) और उन पर बातचीत की आजादी हो। • अपने परिवेश, समय और समाज से संबंधित रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों। • अपनी भाषा गढ़ते हुए लिखने संबंधी गतिविधियाँ हों; जैसे–शब्द खेल, कविता, गीत, चुटकलें पत्र आदि। • सक्रिय और जागरूक बनाने वाली रचनाएँ, अखबार, पत्रिकाएँ, फिल्म और अन्य ऑडियो–वीडियो सामग्री को देखने, सुनने, पढ़ने और लिखकर अभिव्यक्त करने की गतिविधियाँ हों। • कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों; जैसे–अभिनय, रोल–प्ले, कविता, पाठ, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों और उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट लेखन और रिपोर्ट लेखन के अवसर हों।	बच्चे– 1. विभिन्न विषयों पर आधारित विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़कर चर्चा करते हैं, जैसे– पाठ्यपुस्तक में किसी पक्षी के बारे में पढ़कर पक्षियों पर लिखी गई बातों को पढ़कर चर्चा करते हैं। 2. हिन्दी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र–पत्रिका, कहानी, जानकारी परक सामग्री, इंटरनेट, ब्लॉक पर छपने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद–नापसंद, टिप्पणी, राय, निष्कर्ष आदि को मौखिक/सांकेतिक भाषा में अभिव्यक्त करते हैं। 3. पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं। 4. अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतों के बारे में बताते/सुनाते हैं। 5. पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में मौखिक/सांकेतिक भाषा में बताते हैं। 6. विभिन्न संवेदनशील मुद्दो/विषयों; जैसे–जाति, धर्म, रंग, जेंडर, रीति–रिवाजों के बारे में अपने मित्रों, अध्यापकों या परिवार से प्रश्न करते हैं; जैसे– अपने मोहल्ले के लोगों से त्योहार मनाने के तरीके पर बातचीत करना। 7. किसी रचना को पढ़कर उसके सामाजिक मूल्यों पर चर्चा करते हैं। उसके कारण जानने की कोशिश करते हैं; जैसे–अपने आस–पास रहने वाले परिवारों और उनके रहन–सहन पर सोचते हुए प्रश्न करते हैं–रामू काका की बेटी स्कूल क्यों नहीं जाती? 8. विभिन्न प्रकार की सामग्री, जैसे कहानी, कविता, लेख, रिपोतार्ज,संस्मरण,निबंध, व्यंग्य आदि को पढ़ते हुए अथवा पाठ्यवस्तु की

	बारीकी से जाँच करते हुए उसका अनुमान लगाते हैं, विश्लेषण करते हैं, विशेष बिंदु को खोजते हैं। 9. पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं। 10. विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों को समझते हुए उनकी सराहना करते हैं। 11. कहानी, कविता आदि पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों को पहचानते हैं; जैसे–वर्णनात्मक, विवरणात्मक, भावात्मक, प्रकृति चित्रण आदि। 12. विभिन्न पठन सामग्रियों को पढ़ते हुए उनके शिल्प की सराहना करते हैं और अपने स्तरानुकूल मौखिक, लिखित, ब्रेल/सांकेतिक रूप में उसके बारे में अपने विचार व्यक्त करते है। 13. किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने के दौरान समझने के लिए जरूरत पड़ने पर अपने किसी सहपाठी या शिक्षक की मदद लेकर उपयुक्त संदर्भ सामग्री; जैसे–शब्दकोश, विश्वकोश, मानचित्र, इंटरनेट या अन्य पुस्तकों की मदद लेते हैं। 14. अपने पाठक और लिखने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपनी बात को प्रभावी तरीके से लिखते है। 15. पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बननेवाली छवियों और विचारों के बारे में लिखित या ब्रेल भाषा में अभिव्यक्ति करते हैं। 16. भाषा की बारीकियों/व्यवस्था का लिखित प्रयोग करते है; जैसे–कविता के शब्दों को बदलकर अर्थ और लय को समझना। 17. विभिन्न अवसरों/संदर्भो में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं; जैसे–स्कूल के किसी कार्यक्रम की रिपोर्ट बनाना या फिर अपने गाँव के मेले के दुकानदारों से बातचीत। 18. अपने अनुभवों को अपनी भाषा शैली में लिखते हैं। लेखन के विविध तरीकों और

	शैलियों का प्रयोग करते है; जैसे–विभिन्न तरीकों से (कहानी, कविता, निबंध आदि) कोई अनुभव लिखना। 19. दैनिक जीवन से अलग किसी घटना/स्थिति पर विभिन्न तरीके से सृजनात्मक ढंग से लिखते हैं; जैसे–सोशल मीडिया पर, नोटबुक पर या संपादक के नाम पत्र आदि। 20. विविध कलाओं, जैसे– हस्तकला, वास्तुकला, खेती–बाड़ी, नृत्यकला और इनमें प्रयोग होने वाली भाषा (रजिस्टर) का सृजनात्मक प्रयोग करते हैं, जैसे– कला के बीज बोना, मनमोहक मुद्राएँ, रस की अनुभूति। 21. अपने पाठक और लिखने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपनी बात को प्रभावी तरीके से लिखते हैं। 22. अभिव्यक्ति की विविध शैलियों/रूपों को पहचानते हैं, स्वयं लिखते हैं; जैसे– कविता, कहानी, निबंध आदि। 23. पढ़कर अपरिचित परिस्थितयों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बननेवाली छवियों और विचारों के बारे में लिखित/ब्रेल भाषा में अभिव्यक्त करते हैं।

Class VI (English)

Suggested Pedagogical Processes	Learning Outcomes
The learner may be provided opportunities in pairs/groups/ individually and encouraged to: • become familiar with songs/poems/prose in English through input-rich environment, interaction, classroom activities, discussion etc. • listen to English news (TV, Radio) as a resource to develop listening comprehension. • watch/listen to English movies, serials, educational channels with sub-titles, audio-video materials, talking books, teacher reading out from materials and to understand and respond. • participate in individual talk viz. introducing oneself and other persons; participate in role play/make a speech, reproduce speeches of great speakers. • summarise orally the stories, poems and events that he/she has read or heard. • locate sequence of ideas, events and identify main idea of a story/poem through various types of comprehension questions. • read different kinds of texts such as prose, poetry, play for understanding and appreciation and write answers for comprehension and inferential questions. • raise questions based on their reading. • interpret tables, charts, diagrams and maps and write a short paragraph. • think critically and try to provide suggestions/solutions to the problems raised. • read/discuss the ideas of the text for critical thinking • use dictionary as a reference book for finding multiple meanings of a word in a variety of contexts. • take dictation of words, phrases, simple sentences and short paragraphs. • understand the use of antonym (impolite/polite), synonym (big/large) and homonym (tail/tale) • understand the grammatical forms in context/through reading e.g. noun, pronoun, verb, adverb, determiners, etc.	**The learner** 1. participates in activities in English like role play, group discussion, debate, etc. 2. recites and shares poems, songs, jokes, riddles, tongue twisters, etc. 3. responds to oral messages, telephonic communication in English and communicates them in English or home language. 4. responds to announcements and instructions made in class, school assembly, railway station and in other public places. 5. reads a variety of texts in English/Braille and identifies main ideas, characters, sequence of ideas and events and relates with his/her personal experiences. 6. reads to seek information from notice board, newspaper, internet, tables ,charts, diagrams and maps etc. 7. responds to a variety of questions on familiar and unfamiliar texts verbally and in writing. 8. uses synonyms, antonyms appropriately deduces word meanings from clues in context while reading a variety of texts. 9. writes words /phrases /simple sentences and short paragraphs as dictated by the teacher. 10. uses meaningful sentences to describe/narrate factual/imaginary situations in speech and writing. 11. refers to dictionary to check meaning and spelling, and to suggested websites for information. 12. writes grammatically correct sentences for a variety of situations, using noun, pronoun, verb, adverb, determiners, etc. 13. drafts, revises and writes short paragraphs based on verbal, print and visual clues. 14. writes coherently with focus on appropriate beginning, middle and

• understand the context for various types of writing such as messages, notices, letters, report, biography, diary entry, travelogue etc. • draft, revise and write in English/Braille with punctuation and with focus on appropriate beginning, middle and end. • use ICT (Net, mobile, website, Youtube, TED talks etc) to browse for information, for projects/PPT etc. • look at cartoons/pictures/comic strips with or without words, and talk/write about them. • visit a language laboratory. • write a Book Review.	end in English/Braille. 15. writes messages, invitations, short paragraphs and letters (formal and informal) and with a sense of audience. 16. visits a language laboratory. 17. writes a Book Review.

Class VII (English)

Suggested Pedagogical Processes	Learning Outcomes
The learner may be provided opportunities in pairs/groups/ individually and encouraged to: • consciously listen to songs/poems/stories/prose texts in English through interaction and being exposed to print-rich environment. • participate in different events/activities in English in the classroom, school assembly; and organized by different institutions. • listen to English news and debates (TV, Radio) as input for discussion and debating skills. • watch and listen to English movies, serials, educational channels with sub-titles, audio-video materials, teacher reading out from materials and speeches of eminent speakers. • share their experiences such as journeys, visits, etc. in pairs/groups. • introduce self, converse with other persons, participate in role play/make speeches, reproduce speeches of great speakers • summarise orally and in writing a given text,stories or an event • learn vocabulary associated with various professions (e.g. cook, cobbler, farmer, blacksmith, doctor etc) • read stories/ plays (from books/ other sources in English/ Braille) and locate details, sequence of ideas and events and identify main idea. • use material from various sources in English and other languages to facilitate comprehension and co-relation. • understand the rules of grammar through a variety of situations and contexts focusing on noun, pronoun, verb, determiners, time and tense, passivisation, adjective, adverb, etc. • interpret tables, charts, diagrams and maps, and incorporate the information in writing. • think critically on inputs based on reading and interaction and try to provide suggestion/solutions to the problems raised. (The themes could be social issues, environment problems, appreciation of culture and crafts.) • refer sources such as dictionary, thesaurus and encyclopedia to facilitate reading. • read text, both familiar and unfamiliar, and write answers for comprehension and inferential	**The learner** 1. answers questions orally and in writing on a variety of texts. 2. reads aloud stories and recites poems with appropriate pause, intonation and pronunciation. 3. participates in different activities in English such as role-play, poetry recitation, skit, drama, debate, speech, elocution, declamation, quiz, etc., organised by school and other such organisations. 4. engages in conversations in English with family, friends, and people from different professions such as shopkeeper, salesperson etc. using appropriate vocabulary. 5. responds to different kinds of instructions, requests, directions in varied contexts viz. school, bank, railway station. 6. speaks about excerpts, dialogues, skits, short films, news and debate on TV and radio, audio-video programmes on suggested websites. 7. asks and responds to questions based on texts (from books or other resources) and out of curiosity. 8. reads textual/non-textual materials in English/Braille with comprehension. 9. identifies details, characters, main idea and sequence of ideas and events in textual/non-textual material. 10. thinks critically, compares and contrasts characters, events, ideas, themes and relates them to life. 11. reads to seek information in print/online, notice board, signboards in public places,

questions. • take dictation of a paragraph with a variety of sentence structures. • draft, revise and write with appropriate beginning, middle and end, along with punctuation marks. • know the features of various types of writing: messages, emails, notice, letter, report, short personal/biographical experiences etc. • use ICT (Net, mobile, website, Youtube, TED talks etc) to browse for information, for projects/PPT discussion, debate etc. • attempt creative writing, like stories, poems, dialogues, skits etc. • visit a language laboratory • write a Book Review	newspaper, hoardings etc. 12. takes notes while teacher teaches/from books/from online materials. 13. infers the meaning of unfamiliar words by reading them in context. 14. refers dictionary, thesaurus and encyclopedia to find meanings/spelling of words while reading and writing. 15. reads a variety of texts for pleasure e.g. adventure stories and science fiction, fairy tales, biography, autobiography, travelogue etc. (extensive reading). 16. uses appropriate grammatical forms in communication (e.g. noun, pronoun, verb, determiners, time and tense, passivisation, adjective, adverb, etc). 17. organises sentences coherently in English/in Braille with the help of verbal and visual clues and with a sense of audience. 18. writes formal letters, personal diary, list, email, SMS, etc. 19. writes descriptions/narratives showing sensitivity to gender, environment and appreciation of cultural diversity. 20. writes dialogues from a story and story from dialogues. 21. visits a language laboratory. 22. writes a Book Review.

Class VIII (English)

Suggested Pedagogical Processes	Learning Outcomes
The learner may be provided opportunities in pairs/groups/ individually and encouraged to: • participate in classroom activities/school programmes such as Morning Assembly/extempore/debate etc. by being exposed to input-rich environment; • speak about objects/ events in the class/ school environment and outside surroundings. • participate in grammar games and kinaesthetic activities for language learning. • use English news (Newspaper, TV, Radio) as a resource to develop his/her listening and reading comprehension, note-taking, summarizing etc. • watch/listen to English movies, serials, educational channels with sub-titles, audio-video/multi-media materials, for understanding and comprehension. • interview people from various professions such as doctors, writers, actors, teachers, cobblers, newspaper boy, household helps, rickshaw pullers and so on. • use formulaic expressions/instructions such as 'Could I give you ….', 'Shall we have a cup of tea?' to develop communication skills. • participate in individual activities such as introducing personalities/guests during school programmes. • learn vocabulary associated with various professions and use them in different situations. • read stories/ plays (from different books/newspapers in education (NIE) / children's section in magazines in English/Braille) and narrate them. • locate main idea, sequence of events and co-relate ideas, themes and issues in a variety of texts in English and other languages. • use various sources from English and other languages to facilitate comprehension, co-relation and critical understanding of issues.	**The learner** 1. responds to instructions and announcements in school and public place viz. railway station, market, airport, cinema hall, and act accordingly. 2. introduces guests in English, interviews people by asking questions based on the work they do. 3. engages in conversations in English with people from different professions such as bank staff, railway staff, etc. using appropriate vocabulary. 4. uses formulaic/polite expressions to communicate such as 'May I borrow your book?', 'I would like to differ' etc. 5. speaks short prepared speech in the morning assembly. 6. speaks about objects / events in the class / school environment and outside surroundings. 7. participates in grammar games and kinaesthetic activities for language learning. 8. reads excerpts, dialogues, poems, commentaries of sports and games speeches, news, debates on TV, Radio and expresses opinions about them. 9. asks questions in different contexts and situations (e.g. based on the text/ beyond the text/ out of curiosity/ while engaging in conversation using appropriate vocabulary and accurate sentences). 10. participates in different events such as role-play, poetry recitation, skit, drama, debate, speech, elocution, declamation, quiz, etc., organized by school and other such organizations; 11. narrates stories (real or imaginary) and real life experiences in English. 12. Interprets quotations, sayings and proverbs. 13. reads textual/non-textual materials in English/Braille with comprehension. 14. identifies details, characters, main idea and sequence of ideas and events while reading. 15. reads, compares, contrasts, thinks

• interpret quotations, sayings and proverbs. • interpret photographs/sketches, tables, charts, diagrams and maps and incorporate in writing. • think critically, compare and contrast characters/events/ ideas/ themes and relate them to life and try to give opinions about issues. • refer sources such as dictionary, thesaurus and encyclopedia for meaning in context and understanding texts. • use grammar in context such as active and passive voice, reported speech, tenses, parts of speech, etc. • notice punctuation marks in a variety of texts and appropriately use them in editing his/her own writing. • understand the context for various types of writing: messages, notice, letter, report, biography, travelogue, diary entry etc. • take dictation of a passage with specific attention to words pronounced, punctuation and spelling. • attempt various types of writing: notice, letter, report, etc as well as personal/ biographical experiences and extrapolative writings. • use ICT (Net, mobile, website, Youtube, TED talks etc) to browse for information, for projects/PPT discussion, debate, class seminar etc. • attempt creative writing, like stories, poems, dialogues, skits, dialogues from a story and story from dialogues. • visit a language laboratory. • write a Book Review.	critically and relates ideas to life. 16. infers the meaning of unfamiliar words by reading them in context. 17. reads a variety of texts for pleasure e.g. adventure stories and science fiction, fairy tales, also non-fiction articles, narratives, travelogues, biographies, etc. (extensive reading). 18. refers dictionary, thesaurus and encyclopedia as reference books for meaning and spelling while reading and writing. 19. prepares a write up after seeking information in print/ online, notice board, newspaper, etc. 20. communicates accurately using appropriate grammatical forms (e.g., clauses, comparison of adjectives, time and tense, active passive voice, reported speech etc.) 21. writes a coherent and meaningful paragraph through the process of drafting, revising, editing and finalising. 22. Writes short paragraphs coherently in English/Braille with a proper beginning, middle and end with appropriate punctuation marks. 23. writes answers to textual/non-textual question after comprehension/ inference; draws character sketch, attempts extrapolative writing. 24. writes email, messages, notice, formal letters, descriptions/narratives, personal diary, report, short personal/ biographical experiences etc. 25. develops a skit (dialogues from a story) and story from dialogues. 26. visits a language laboratory. 27. writes a Book Review .

कक्षा – 6, संस्कृत

कक्षा–6 संस्कृत सीखने–सिखाने की प्रक्रिया	सीखने की सम्प्राप्ति (Learning Outcomes)
• श्लोकों का शुद्ध उच्चारण करते हुए सस्वर पाठ हेतु अवसर देना।	1. श्लोकों के ध्वनियों का अनुश्रवण करते हुए सुनने के अनुभव से अपने ढंग से मौखिक अभिव्यक्ति कर सकेंगे।
• गद्य अनुच्छेदों का उचित उतार चढ़ाव, विराम चिह्न, बालाघात आदि के साथ अनुश्रवण करना।	2. गद्य/अनुच्छों के अरोह अवरोह, विराम चिह्न व बलाघात का बोध कर स्वानुभव से अभिव्यक्ति कर सकेंगे।
• आडियों कैसेट्स (रिकार्डेड श्लोक) का अनुश्रवण।	3. आडियो कैसेट्स का अनुश्रवण कर श्लोकों का सस्वर वाचन आरोह–अवरोह के अनुक्रम के साथ कर सकेंगे।
• रोचक स्थानीय परिवेश से संबंधित विषय जैसे– घर, विद्यालय, गाँव, मेला आदि, विषयों पर आधारित वर्णन हेतु अवसर प्रदान करना।	4. घर विद्यालय, गाँव, मेला आदि से संबंधित घटित वर्णनों को देखकर व सुनकर घटित वर्णन को गति देना। गतिविधि पूर्वक बात करना तथा आदेश व निर्देश को समझ कर व्यवहार करना।
• सरल संस्कृत गीत व पहेलियाँ सुनाना तथा सुनने का सतत अभ्यास कराना	5. संस्कृत गीतों व पहेलियों को सुनकर व समझकर संस्कृत गीतों का सस्वर गायन कर सकेंगे तथा अपने ढंग से पहेलियों की अभिव्यक्ति भी कर सकेंगे।
• कठिन शब्दों को श्याम पट पर लिखने हेतु प्रेरित करना।	6. कठिन शब्दों को श्याम पट पर लिखकर अभ्यास कराने से लेखन कौशल विकसित होगा तथा अभिव्यक्ति क्षमता सतत बढ़ेगी।
• संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत रस, छंद, अलंकारो को समझ बढ़ाने हेतु अवसर प्रदान करना।	7. संस्कृत में प्रसारित पत्र–पत्रिकाओं में निहित रस, छंद व अलंकारों को समझपूर्वक पढ़कर अपना सुझाव देना व टिप्पणी करने की क्षमता विकसित करना।
• छात्रों द्वारा सामूहिक व व्यक्तिगत रूप से श्लोकों (पद्यों) का वाचन कराना।	8. छात्रों को सामूहिक व व्यक्तिगत वाचन कराने (श्लोकों का) से सीखने की प्रवृत्ति विकसित होगा तथा वाचन कौशल का विकास होगा।
• श्लोक व अनुच्छेदों में आए संधियुक्त पदों का अभ्यास कराना।	9. श्लोक व अनुच्छेदों में आए संधियुक्त पदों का विग्रह, विभक्ति व वाचन के अभ्यास से विषय की अवधारणा सुदृढ़ बनेगी तथा व्याकरणगत कठिनाइयाँ हल हो सकेंगी।
• श्लोक व अनुच्छेद का श्रुतलेख व अनुलेख कराना।	10. श्लोक व अनुच्छेद से संबंधित वाचन प्रतियोगिता से विषयगत समझ बेहतर बनेगी तथा छात्र पठन–पाठन की प्रक्रिया में गति यति लय का अनुभव कर सकेंगे।
	11. श्लोक व अनुच्छेद का श्रुतलेख व अनुलेख के सतत अभ्यास से छात्र शुद्ध संस्कृत वाक्य लिख सकेंगे।

• परिचित स्थिति / विषय घर कक्षा विद्यालय व त्यौहार (पर्व) पर दस वाक्य संस्कृत में लिखने का अभ्यास कराना। • चित्र देखकर संस्कृत में दस वाक्य का लेखन कराना।	12. परिचित विषय– घर, कक्षा, विद्यालय, पर्व आदि पर संस्कृत में दस वाक्य का लेखन कर सकेंगे, जिससे संस्कृत लिखने की प्रवृत्ति बढेगी। 13. चित्र देखकर संस्कृत में दस वाक्य बनाना, इससे संस्कृत सम्प्रेषण कौशल का विकास होगा।
• अकारान्त, आकारान्त इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त आदि शब्द रूपों को श्याम पट पर लिखकर सही प्रयोगों की जानकारी देना तथा उसका प्रयोग कराना।	14. शब्द रूपों को श्याम पट लिखकर सतत अभ्यास से संस्कृत लेखन की प्रवृत्ति बढ़ेगी तथा छात्रों को कहाँ, कैसे विभक्ति व वचनों का प्रयोग करना हैं इसकी समझ बनेगी।
• संज्ञा व सर्वनाम शब्दों को श्याम पट पर लिखकर उनके प्रयोगों की जानकारी प्रदान कराना। • संख्याओं का चार्ट टॉग कर शिक्षण कार्य में अभ्यास कराना।	15. छात्र पाठगत संज्ञा व सर्वनाम के सतत् अभ्यास से क्रिया पदो के प्रयोग को जान सकेंगे तथा संज्ञा व सर्वनाम के साथ संख्याओं का सार्थक प्रयोग कर सकेंगे।
• कारक चिह्नों को श्याम पट लिखवाना तथा अर्थ बोध कराना।	16. छात्र कारक / विभक्तियों को समझकर सार्थक संस्कृत के शब्द / वाक्य बोल सकेंगे व लिख सकेंगे।
• धातु रूपों को श्याम पट पर लिखकर सार्थक प्रयोग करवाना।	17. छात्र धातु रूप को समझकर विभिन्न लकारों में (लट्, लृट, लङ्, लोट, विधिलिङ् लकारों) सही प्रयोग कर सकेंगे।
• संधि युक्त पदों को श्याम पट पर लिखकर विग्रह कराना तथा विग्रहयुक्त पदों का संधि कराना।	18. विद्यार्थी संधियों के लक्षणों को समझकर संधि एवं विच्छेद युक्त पदों का सार्थक प्रयोग कर सकेंगे।
• लिङ्ग वचन एवं पुरूषों का अभ्यास कराना। खेल विधि द्वारा बच्चों को विभक्तियों के रूप में खड़ाकर प्रदत्त विभक्तियों के अनुसार रूप बनवाना। कार्ड में अंकित विभक्तियों का ज्ञान कराना।	19. छात्र लिङ्ग, वचन व पुरूषों को समझकर संस्कृत वाक्यों का सार्थक प्रयोग कर सकेंगे।
• अव्यय शब्द जैसे यत्र, तत्र, कुत्र यदा, कदा, सर्वदा आदि का अभ्यास कराना। अव्यय पदों को छाँटकर छोटे–छोटे वाक्यों का अभ्यास कराना।	20. छात्र अव्यय को समझकर सार्थक प्रयोग कर सकेंगे।
• मूल्य परक / शिष्टाचारात्मक शब्दों में बलिदान, त्याग, उपकार, देश प्रेम आदि विषय से संबोधित वाक्यों को श्याम पट पर लिखकर अभ्यास कराना।	21. छात्रों में मूल्यपरक समझ विकसित होगी जिसका प्रभाव व्यवहार में दिखेगा।

कक्षा – 7, संस्कृत

कक्षा–7 संस्कृत सीखने–सिखाने की प्रक्रिया	सीखने की सम्प्राप्ति (Learning Outcomes)
• श्लोक पाठ वार्तालाप, कथा पाठ की प्रस्तुति हेतु अवसर देना। सूक्तियों का वाचन, उचित हावभाव के साथ कहानी सुनाना। कठिन शब्दों को श्याम पट पर लिखकर अर्थबोध कराना। आडियो कैसेट्स का अनुश्रवण। गीत एवं पहेलियाँ सुनना। संस्कृत में दिये गये आदेशों व निदेर्शों का पालन कराना।	1. छात्र श्लोकों को सुनकर समझ सकेंगे। श्लोकों का भाव ग्रहण कर आनन्दानभूति कर सकेंगे। श्रुत सामग्री के मुख्य भाव के समझ सकेंगे तथा आदेशों व निर्देशों का पालन कर तदनुरूप व्यवहार कर सकेंगे।
• कठिन शब्दों को श्याम पट पर लिखकर उनका उच्चारण अभ्यास करना/सुनी गई कहानी के सारांश को संस्कृत में सुनाना किसी स्थिति देखकर छात्रों के मध्य संस्कृत में वार्तालाप करवाना। कण्ठस्थ श्लोक सुभाषित सुनाना संस्कृत पहेलियों को सुनाना, श्लोक गीत सुनाने की प्रतियोगिता का आयोजन कराना।	2. संस्कृत श्लोकों/सुभाषितों को सुनकर भाव ग्रहण करते हुए अनुकरण वाचन, परिचित व सुने गये वर्णन को अपने विचारों में व्यक्त कर सकना। श्रुत कहानी को अपने शब्दों में सुनाना विभिन्न परिस्थितियों में संस्कृत में वार्तालाप करना, संस्कृत प्रश्नों का संस्कृत में उत्तर देना। कण्ठस्थ श्लोकों को उचित गति व हाव भाव के साथ सुनाना, कण्ठस्थ धातु व शब्द रूप को सुनाना, चित्रों को देखकर मौखिक रूप से संस्कृत में छोटे–छोटे वाक्य रचना करना।
• संस्कृत वाक्यों, अनुच्छेदों एवं श्लोकों का आदर्श वाचन करना, सामूहिक अनुकरण वाचन करना, व्यक्तिगत अनुकरण वाचन तथा श्यामपट पर श्लोक लिखकर पढ़ना।	3. संस्कृत के वाक्यों, एवं अनुच्छेदों को शुद्ध कर सकेंगे। उचित गति, प्रवाह एवं गति के साथ वाचन कर सकेंगे। संस्कृत अनुच्छेदों का मौन वाचन कर उसमें निहित भावों को समझ सकेंगे। सामूहिक व व्यक्तिगत वाचन से झिझक दूर होगी तथा पढ़ने की प्रवृत्ति विकसित होगी। व्याकरणगत विधाओं के अभ्यास से विषयवस्तु की अवधारणा पुष्ट होगी। सूक्तियों व सुभाषितों के सतत पठन से पठन कौशल का विकास होगा।
• पाठों में प्रयुक्त व्याकरण– संधि, लिंग, वचन, क्रिया एवं रूपों को श्याम पट पर लिखकर पढ़ना, संकलित सूक्तियों एवं सुभाषितों को पढ़वाना तथा अर्थ बोध कराना।	4. शुद्ध, सहज व पठनीय रूप में श्लोकों, अनुच्छेदों व सूक्तियों को लिख सकेंगे। सुलेख, अनुलेख व श्रुतलेख के अभ्यास से लेखन कौशल का सतत विकास होगा। उपसर्ग व प्रत्यय में धातु लगाकर तथा धातु में प्रत्यय व उपसर्ग लगाकर नया शब्द बनाने से संस्कृत व्याकरण पुष्ट होगा तथा विषयगत अवधारणाएँ भी पुष्ट होगी।

• कक्षा में पटि्टकाओं पर लिखी सूक्तियों को लिखवाना, सुलेख व अनुलेख का अभ्यास कराना, श्रुतलेख लिखवाना सरल व छोटे वाक्यों का अनुवाद कराना, प्रश्नो को श्याम पट पर लिखकर उनके उत्तर संस्कृत में लिखवाना। सूक्तियों एवं सुभाषितों को पटि्टकाओं में लिखवाकर कक्षा में लगवाना पढ़ी व सुनी हुई कथा के चार–पाँच वाक्य संस्कृत में लिखवाना उपसर्ग व प्रत्यय को धातुओं में लगाकर नया शब्द बनाना। • शब्द रूप व धातु रूप के प्रयोगों से अवगत कराना, धातु व शब्द रूप को समझकर कण्ठस्थ कराना। • अनुच्छेदों में निहित सर्वनामिक शब्दों को छाँटकर श्याम पट लिखवाना तथा उनके प्रयोग की जानकारी देना। • पाठों में प्रयुक्त संख्यावाची विशेषणों को श्याम पट पर लिखना तथा उनके प्रयोग द्वारा अन्य वाक्य का निर्माण करवाना। • समासिक शब्दों को श्याम पट पर लिखकर विग्रह करना तथा विग्रह शब्दों को समास बनाना। • पाठ में प्रयुक्त कारक शब्दों को छाँटकर उन्हें श्याम पट पर लिखकर "नम स्वस्ति स्वाहा" के योग में बनने वाले शब्दों को श्याम पट पर छोटे–छोटे संस्कृत वाक्यों को लिखकर अभ्यास करवाना तथा अव्यय एवं उपसर्ग को श्याम पट पर लिखकर नये शब्दों का निर्माण कराना। • पाठों में आये क्रियाओं को छाँटकर श्यामपट पर लिखकर उनके प्रयोग का अभ्यास करवाना। • संधियुक्त शब्दों का विच्छेद तथा विच्छेदयुक्त शब्दों का संधि, श्याम पट पर लिखकर अभ्यास कराना।	5. शब्द रूप व धातु रूप के प्रयोग को समझकर सार्थक प्रयोग कर सकेंगे। 6. अनुच्छेदों में निहित सर्वनामिक शब्दों के सतत अभ्यास से प्रयोग की जानकारी प्राप्त होगी। 7. संज्ञा व सर्वनाम के अनुरूप संख्यावाची विशेषणों का सार्थक प्रयोग कर सकेंगे। 8. समासिक शब्दो के विग्रह तथा विग्रह शब्दों से समास बनाने के अभ्यास से समास का बोधकर सकेंगे। 9. कारक एवं विभक्तियों को समझकर सही प्रयोग कर सकेंगे। 10. अव्यय एवं उपसर्ग के अभ्यास से नए शब्द का निर्माण कर सकेंगे। 11. पाठगत क्रिया पदों के माध्यम से लकार की अवधारणा को जान सकेंगे। 12. संधियुक्त शब्दों का विच्छेद व विच्छेद युक्त शब्दों की संधि के विषय में जान सकेंगे। 13. संस्कृत में प्रसारित पत्र–पत्रिकाओं में निहित रस, छंद व अलंकारों को समझपूर्वक पढ़कर अपना सुझाव देना व टिप्पणी करने की समता विकसित होगी।

कक्षा – 8, संस्कृत

कक्षा–8 संस्कृत सीखने–सिखाने की प्रक्रिया	सीखने की सम्प्राप्ति (Learning Outcomes)
• श्लोक व अनुच्छेद से संबंधित वाचन प्रतियोगिता से विषयगत समझ बेहतर बनेगी तथा छात्र पठन–पाठन की प्रक्रिया में गति यति लय का अनुभव कर सकेंगे • पाठगत गद्य/पद्य (श्लोक) को सुनकर भावग्रहण करना तथा आदेशों व निर्देशों का पालन करना। • मित्रों व गुरूओं द्वारा पूछे गये प्रश्नों को समझना तदनुसार क्रिया करना। • संस्कृत की लघुकथाओं से भाव ग्रहण करना। • लघुकथाओं का सारांश सुनाना अपने सहपाठियों के साथ सरल संस्कृत में प्रश्न पूछना। • संस्कृत प्रश्नों का उत्तर सरल संस्कृत में देना तथा सरल संस्कृत में प्रश्न पूछना। • संस्कृत गद्यांशों का उचित गति एवं शुद्ध उच्चारण सहित वाचन करना, गति लय के अनुसार श्लोकों का वाचन करना तथा पठितांश प्रश्नों का उत्तर संस्कृत में देना। • क्रमहीन संस्कृत वाक्यों को घटना क्रम में लिखना, दिये गये संकेतो के आधार पर अनुच्छेद/लघु कथाओं को लिखना व कण्ठस्थ सूक्तियों/सुभाषितों को लिखना। • पाठ्यवस्तु को पढ़कर व सुनकर उसमें निहित गुण दोषों पर अपना मत लिखना। • संज्ञा, अव्यय व विशेषण का प्रयोग करना, संज्ञा व विशेषण के साथ विभक्तियों का प्रयोग करना। • वाक्य में कर्त्तृ पद के अनुसार विभिन्न लकारों में क्रिया का प्रयोग करना। • संधियुक्त पदों का संधि, विच्छेद तथा संधि विच्छेद शब्दों को संधियुक्त करना। • धातुओं के साथ पूर्वकालिक/ वर्तमानकालिक/ भूतकालिक/भविष्यतकालिक/उत्तरकालिक– क्त्वा/ल्यप्/शतृ शानच/क्त क्तवतु तुमुन् आदि प्रत्यय लगाकर शब्दों का निर्माण करना। • प्रार्थना व बाल सभा में संस्कृत के आदर्श वाक्यों को प्रस्तुत करना, संस्कृत में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिता में भाग लेना तथा विभिन्न संस्कृत कार्यक्रम जैसे कालिदास जयन्ती, बाल्मीकि जयन्ती, गीता जयन्ती आदि संस्कृत कार्यक्रम में भाग लेकर अपनी अभिव्यक्ति देना।	1. संस्कृत में दिये गये आदेशों व निर्देशों का पालन कर सकेंगे तथा संस्कृत गद्यों व पद्यों को सुनकर भावग्रहण कर सकेंगे। 2. मित्रों व गुरूओं द्वारा पूछे गये प्रश्नों को समझ सकेंगे। 3. संस्कृत की लघुकथा, पञ्चतंत्र की कथा हितापदेश आदि को सुनकर भाव ग्रहण कर सकेंगे। 4. लघुकथाओं का सारांश सरल संस्कृत में सुना सकेगा। अपने मित्रों के साथ सरल संस्कृत में प्रश्न पूछ सकेंगे। 5. सरल संस्कृत प्रश्नों का उत्तर संस्कृत दे सकेंगे व संस्कृत में छोटे संवादों का अभिनय कर सकेंगे। 6. संस्कृत गद्यांशों/पद्यांशों का लय, गति के अनुसार उच्चारण कर सकेंगे, श्लोकों का वाचन विराम चिन्हों का प्रयोग स्पष्टता पूर्वक कर सकेंगे, तथा पठितांश प्रश्न का उत्तर संस्कृत में दे सकेंगे? 7. संस्कृत निबंध के वाक्य को या पाठक के वाक्य को घटना क्रम के साथ जोड़ते हुए सही संस्कृत वाक्य लिख सकेंगे। संकेतों के आधार पर अनुच्छेद के वाक्यों व लघु कथाओं को लिख सकेंगे तथा कण्ठस्थ सूक्तियों/सुभाषितों के बार–बार अभ्यास से शुद्ध लिख सकेंगे। 8. पाठ्यवस्तु में निहित अवधारणाओं को समझकर अपने अनुभव के आधार पर गुण–दोषों का आंकलन कर लिख सकेगा। 9. पाठगत संज्ञा, अव्यय व विशेषण को समझकर संस्कृत, वाक्यों का शुद्ध प्रयोग कर सकेंगे तथा संज्ञा व विशेषण वाले शब्दों में विभक्ति लगाकर नये शब्दों के प्रयोग से अवगत हो सकेंगे। 10. वाक्य में कर्तृपद को समझकर विभिन्न लकार जैसे लट्, लृट, लोट्, लङ् व विधिलिङ् लकारों में क्रिया का प्रयोग करने में दक्षता अर्जित कर सकेंगे। 11. संधि के विभिन्न नियमों को समझ संधियुक्त पदों का संधिविच्छेद तथा संधिविच्छेद शब्दों को संधियुक्त शब्द बना सकेंगे। 12. कृदन्त में निहित प्रकारों का ज्ञानकर क्त्वा, ल्यप्, शतृ, शानच्, क्त, क्तवतु ष्य तुमुन् आदि प्रत्यय लगाकर शब्दों का निर्माण कर

	सकेंगे। 13. कृदन्त में निहित प्रकारों का ज्ञानकर क्त्वा, ल्यप्, शतृ, शानच्, क्त, क्तवतु ष्य तुमुन् आदि प्रत्यय लगाकर शब्दों का निर्माण कर सकेंगे। 14. प्रार्थना व बाल सभा में संस्कृत श्लोकों एवं सूक्ति वाक्यों के उच्चारण में अरोहावरोह को समझकर आदर्श वाक्यों को प्रस्तुत कर सकेंगे। विभिन्न प्रतियोगिताओं में जैसे– श्लोक प्रतियोगिता संस्कृत निबंध प्रतियोगिता, संस्कृत कहानी प्रतियोगता व गीता पाठ प्रतियोगिता में उच्चारण की विधाओं में लय व गति को समझ कर अच्छी अभिव्यक्ति दे सकेंगे तथा विभिन्न संस्कृत कार्यक्रम में संस्कृत के भाव व भाषा की अवधारणा को समझते हुए व्याकरणगत नियमों का पालन करते हुए अपने अनुभव के आधार पर सहज अभिव्यक्ति दे सकेंगे।

कक्षा – VI (गणित)

प्रस्तावित अध्यापन प्रक्रिया	अधिगम परिणाम (Learning Outcomes)
शिक्षार्थी को जोड़े/समूह/व्यक्तिगत तौर पर अवसर उपलब्ध कराते हुये, निम्नांकित हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए। • 8 अंकों तक की संख्याओं पर काम करना, जैसे – किसी संपत्ति का मूल्य, विभिन्न शहरों की कुल आबादी आदि। • दो मकानों के मूल्य, दर्शकों की संख्या, पैसों के लेन–देन आदि स्थितियों के द्वारा संख्याओं की तुलना करना। • संख्याओं का गुणों के आधार पर वर्गीकरण जैसे सम संख्या, विषम संख्या आदि • 2, 3, 4, 5, 6, 8, 10, 11 से विभाज्य होने के पैटर्न का अवलोकन करना • अंकों के पैटर्न बनाना जिसके द्वारा महत्तम समापवर्तक तथा लघुत्तम समापवर्त्य पर चर्चा की जा सके। • दैनिक जीवन की उन स्थितियों की खोज जिसमें महत्तम समापवर्तक तथा लघुत्तम समापवर्त्य का प्रयोग होता है। • ऋणात्मक संख्याओं की दैनिक जीवन में उपयोग की स्थितियों उत्पन्न करना तथा उन पर चर्चा करना। • उन स्थितियों पर चर्चा करना जिनमें संख्याओं के भिन्न व दशमलव निरूपण की आवश्यकता हो । • अज्ञात राशियों को चर राशियों (अक्षर) से प्रदर्शित करने की आवश्यकता को दर्शाने के लिए विभिन्न गणितीय संदर्भो का उपयोग करना।	शिक्षार्थी : 1. बड़ी संख्याओं से संबंधित प्रश्न उचित संक्रियाओं (योग, अंतर, गुणा व भाग) के प्रयोग द्वारा हल कर सकता है। 2. संख्याओं का सम, विषम, अभाज्य, सह– अभाज्य संख्याओं आदि के रूप में वर्गीकरण (पैटर्न के आधार पर) कर सकता है। 3. विशिष्ट स्थिति में महत्तम समापवर्तक तथा लघुत्तम समापवर्त्य का उपयोग कर सकता है। 4. पूर्णांकों के योग तथा अंतर से संबंधित प्रश्नों को हल कर सकता है। 5. पैसा, लंबाई, तापमान आदि से संबंधित अलग–अलग परिस्थितियों में भिन्नों तथा दशमलवों का उपयोग कर सकता है, जैसे – $7\frac{1}{2}$ मीटर कपड़ा, दो स्थानों के बीच की दूरी 112.5 किलोमीटर है आदि। 6. भिन्नों/दशमलवों के योग व अंतर पर आधारित दैनिक जीवन की समस्याओ को हल कर सकता है। 7. किसी स्थिति के सामान्यीकरण हेतु चर राशि का विभिन्न संक्रियाओं के साथ प्रयोग करता है जैसे – x तथा 3 इकाई भुजा के आयत का परिमाप 2(x+3) इकाई होगा। 8. अनुपात का प्रयोग कर विभिन्न राशियों की तुलना करता है। जैसे – किसी कक्षा में लड़कियों एवं लड़कों की संख्या का अनुपात 3 : 2 है। 9. इबारती प्रश्नों के हल करने में ऐकिक नियम का उपयोग करता है। जैसे – यदि एक दर्जन कापियों की कीमत दी गई हो तो 1 कापी की कीमत ज्ञात कर 7 कापियों की कीमत ज्ञात कर सकता है। 10. ज्यामितीय अवधारणाओं जैसे रेखा, रेखाखण्ड, खुली एवं बंद आकृतियाँ, कोण, त्रिभुज, चर्तुभुज, वृत आदि को अपने परिवेश के उदाहरणों के माध्यम से

• चर राशियों के उपयोग की आवश्यकता को खोजना एवं सामान्यीकरण करना। • उन स्थितियों की चर्चा करना जिनमें अनुपात के उपयोग से संख्याओं की तुलना की आवश्यकता हो। • अनुपात व ऐकिक विधि आधारित इबारती प्रश्नों पर चर्चा एवं हल करना। • विभिन्न आकृतियों को मूर्त मॉडल तथा विभिन्न ज्यामितियों आकृतियों जैसे त्रिभुज तथा चर्तुभुज आदि की मद्द से खोजना। • व्यक्तिगत रूप से या समूह में कक्षा कक्ष के अंदर अथवा बाहर विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों को पहचानना तथा उनके गुणधर्मों का अवलोकन करना। • स्टिक (प्लास्टिक या लकड़ी की काड़ी) या पेपर कटिंग की मद्द से विभिन्न आकृतियों की रचना करना। • 3क आकृतियों के विभिन्न मॉडल तथा नेट्स जैसे – घनाभ, बेलन, आदि का अवलोकन तथा 3क आकृतियों के विभिन्न अवयव जैसे फलक, कोर, शीर्ष पर चर्चा करना। • कोणों की अवधारणा को कुछ उदाहरणों द्वारा समझाना जैसे – दरवाजे का खुलना, पेंसिल बाक्स का खुलना आदि। विद्यार्थियों को अपने परिवेश से और अधिक उदाहरण देने हेतु प्रोत्साहित करना। • घूर्णन के आधार पर कोणों का वर्गीकरण करना।	समझा सकता है।कोणों के बारे में अपनी समझ निम्नानुसार व्यक्त कर सकता है– –अपने परिवेश में कोणों की पहचान कर सकता है। –कोणों को उनके माप के आधार पर वर्गीकृत कर सकता है। –कोण 45^0, 90^0, 180^0 का संदर्भ कोण के रूप में उपयोग कर कोणों के माप का अनुमान लगा सकता है। 11 रैखिक सममिति के बारे में अपनी समझ निम्नानुसार व्यक्त कर सकता है– – उन द्विविमीय (2D) आकृतियाँ की पहचान कर सकता है, जो एक या अधिक रेखाओं के सापेक्ष सममित है। –द्विआयामी सममित आकृतियों की रचना कर सकता है। 12. त्रिभुजों को उनके कोण तथा भुजाओं के आधार पर वर्गीकृत कर सकता है। जैसे – भुजाओं की लंबाई के आधार पर विषमबाहु त्रिभुज, समद्विबाहु त्रिभुज, समबाहु त्रिभुज आदि। 13. चतुर्भुजों को उनके कोण तथा भुजाओं के आधार पर वर्गीकृत कर सकता है। 14. अपने परिवेश से विभिन्न 3D वस्तुओं की पहचान कर सकता है। जैसे – गोला, घन, घनाभ, बेलन, शंकु आदि। 15. 3D वस्तुओं/आकृतियों के कोर, शीर्ष, फलक का वर्णन कर उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है। 16. परिवेश की आयताकार वस्तुओं का परिमाप और क्षेत्रफल ज्ञात कर सकता है। जैसे– कक्षा का फर्श, चाक के डब्बे की उपरी सतह की परिमिति तथा क्षेत्रफल। 17. दी गई/ संकलित की गई जानकारियों जैसे– विगत छः माह में किसी परिवार के विभिन्न सामाग्रियों पर हुए खर्च को सारणी, चित्रारेख, दण्डारेख के रूप में प्रदर्शित कर उसकी व्याख्या कर सकता है।
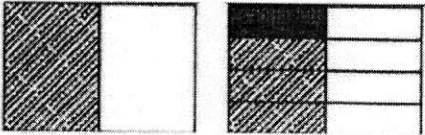
कक्षा – VII (गणित)

<table>
<tr><th>प्रस्तावित अध्यापन प्रक्रिया</th><th>अधिगम परिणाम(Learning Outcomes)</th></tr>
<tr><td>
शिक्षार्थी को जोड़े/समूह/व्यक्तिगत तौर पर अवसर उपलब्ध कराते हुये, निम्नांकित हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए।

• पूर्णांको के गुणा तथा भाग के नियमों को खोजने हेतु संदर्भ उपलब्ध कराना। यह कार्य संख्या रेखा अथवा संख्या पैटर्न के द्वारा किया जा सकता है। उदाहरण के लिए
$3\times 2 = 6$
$3\times 1 = 3$
$3\times 0 = 0$
$3\times (-1) = -3$
$3\times (-2) = -6$
अतः $3\times (-3) = -9$
अर्थात एक धनात्मक पूर्णांक का ऋणात्मक पूर्णांक से गुणा होता है तो एक ऋणात्मक पूर्णांक प्राप्त होती है।

• भिन्न/दशमलव का गुणा/ भाग चित्रों/कागज मोड़ने के क्रिया कलाप/दैनिक जीवन के उदाहरणों के द्वारा खोजना।
उदाहरणार्थ
(a) $\frac{1}{2}\times\frac{1}{4}$ का अर्थ है, $\frac{1}{2}$ का $\frac{1}{4} = \frac{1}{8}$

(b) $\frac{1}{2}\div\frac{1}{4}$ का अर्थ है, $\frac{1}{2}$ में $\frac{1}{4}$ 2 बार आता है।

• उन स्थितियों की चर्चा जिनमें भिन्नात्मक संख्याओं को एक–दूसरे से विपरीत दिशाओं में प्रयोग किया जाता है जैसे
</td><td>
शिक्षार्थी :

1. दो पूर्णांको का गुणा/भाग कर सकता है।
2. भिन्नों के भाग तथा गुणन की व्याख्या कर सकता है।
3. उदाहरणा के लिए – $\frac{4}{5}\times\frac{2}{3}$ की व्याख्या $\frac{4}{5}$ का $\frac{2}{3}$ के रूप में करता है। इसी प्रकार $\frac{1}{2}\div\frac{1}{4}$ की व्याख्या इस रूप में करता है कि कितने $\frac{1}{4}$ मिलकर $\frac{1}{2}$ बनाते हैं।
4. भिन्न/दशमलव का गुणा तथा भाग हेतु कलन (एल्गोरिथम) विधि का प्रयोग करता है।
5. परिपेय संख्या से संबंधित दैनिक जीवन की समस्याओं को हल कर सकता है।
6. बड़ी संख्याओं के गुणा तथा भाग को सरल करने हेतु संख्याओं के घातांक का प्रयोग कर सकता है।
7. दैनिक जीवन की परिस्थितियों को सरल समीकरण के रूप में प्रदर्शित कर हल कर सकता है।
8. बीजीय व्यंजकों को जोड़ व घटा सकता है।
9. समानुपातिक मात्राओं को पहचान सकता है। जैसे – यह बता सकता है कि 15, 45, 40, 120 समानुपात में है क्योंकि $\frac{15}{45}$ का मान $\frac{40}{120}$ के बराबर है।
10. प्रतिशत को भिन्न तथा दशमलव में बदल सकता है तथा इसका विलोम।
11. लाभ/हानि का प्रतिशत तथा साधारण ब्याज में दर प्रतिशत की गणना कर सकता है।
12. कोणों के युग्म को उनके गुणों के आधार पर रेखीय, पूरक, संपूरक, आसन्न कोण, शीर्षाभिमुख कोण के रूप में वर्गीकृत कर सकता है तथा यदि एक कोण का मान
</td></tr>
</table>

एक पेड़ के $10\frac{1}{2}$ मी. दायी ओर चलना तथा $15\frac{2}{3}$ पेड़ के बायीं ओर चलना आदि

- विद्यार्थियों को अवगत कराना कि किस प्रकार बारंबार गुणा को लघु रूप में किस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है जैसे– $2 \times 2 \times 2 \times 2 \times 2 \times 2 = 2^6$
- विभिन्न संदर्भो में चरं तथा अचर राशियों को विभिन्न संक्रियाओं के साथ संयोजित कर बीजीय व्यंजक बनाना।
- दैनिक जीवन की उन स्थितियों को प्रस्तुत करना जिनमें समीकरण निर्माण की आवश्यकता हो तथा चर का वह मान ज्ञात करना जो समीकरण को संतुष्ट करे।
- दैनिक जीवन में उपयोगी समान वस्तुओं को जोड़ने/घटाने की गतिविधि करना। जैसे – 5 कॉपियों के समूह में 3 कॉपियां मिलाने पर कुल कॉपियों की संख्या।
- अनुपात तथा प्रतिशत (अनुपातों की समानता) की अवधारणा का विकास करने हेतु चर्चा करना।
- दैनिक जीवन से संबंधित लाभ/हानि तथा साधारण ब्याज पर चर्चा करना जिनमें प्रतिशत का उपयोग होता है।
- दैनिक जीवन के उन उदाहरणों को खोजना जिनमें उभयनिष्ट शीर्ष के कोण युग्म शामिल हों जैसे–कैंची, अक्षर X, T, चौराहा आदि
- चित्र बनाकर कोणों के युग्म के विभिन्न गुणों की पुष्टि करना (एक समूह एक कोण का मान दे तो दूसरा समूह दूसरे कोण का मान बताये।)
- जब दो रेखाओं को एक तिर्यक रेखा काटे तो प्राप्त विभिन्न कोण युग्मों के बीच संबंध को प्रदर्शित करना, चित्रों के

दिया हो तो दूसरे का मान ज्ञात कर सकता है।

13. तिर्यक रेखा द्वारा दो रेखाओं को काटने से बने कोणों के जोड़े (युग्मों) के गुणधर्म की पुष्टि कर सकता है।
14. यदि त्रिभुज के दो कोण ज्ञात हों तो तीसरे अज्ञात कोण का मान ज्ञात कर सकता है।
15. त्रिभुजों के बारे में दी गई जानकारियों (जैसे SSS, SAS, ASA, RHS) के आधार पर त्रिभुजों की सर्वांगसमता की व्याख्या कर सकता है।
16. स्केल तथा परकार की सहायता से एक रेखा के बाहर स्थित बिंदु से रेखा के समानान्तर एक अन्य रेखा खींच सकता है।
17. एक बंद आकृति का अनुमानित क्षेत्रफल इकाई वर्ग/ग्राफ पेपर की सहायता से निकाल सकता है।
18. आयत तथा वर्ग से घिरे क्षेत्र के क्षेत्रफल की गणना कर सकता है।
19. दैनिक जीवन के साधारण आँकड़ो के लिये विभिन्न प्रतिनिधी मानों जैसे समान्तर माध्य, मध्यिका, बहुलक की गणना कर सकता है।
20. वास्तविक जीवन की स्थितियों में परिवर्तनशीलता को पहचानता है, जैसे अपनी कक्षा के विद्यार्थियों की ऊँचाईयों में परिवर्तन, घटनाओं के घटित होने की अनिश्चितता जैसे – सिक्के को उछालना।
21. दण्ड आरेख से आँकड़ो की व्याख्या कर सकता है। जैसे– गर्मियों में बिजली की खपत सर्दियों से ज्यादा होती है, किसी टीम द्वारा प्रथम 10 ओवर में बनाये गये रन आदि।

माध्यम से त्रिभुज के कोणों तथा उसकी भुजाओं के बीच संबंध प्रदर्शित करना। • विभिन्न प्रकार के त्रिभुजों की रचना कर विद्यार्थियों को उनके कोण नापने हेतु निर्देशित करना, एवं उसकी पुष्टि करना। • त्रिभुजों के बहिष्कोण के गुण तथा पायथागोरस प्रमेय से अवगत कराना। • अपने परिवेश से उन सममित आकृतियों को पहचानना जो घूर्णन सममितता प्रदर्शित करती हैं। • कागज मोड़ने की गतिविधि द्वारा सममितता को प्रदर्शित करना। • सर्वांगसमता के मापदंड (शर्त) स्थापित करना तथा उसकी पुष्टि एक आकृति को दूसरे के उपर इस प्रकार रखकर करना कि वे एक दूसरे को पूरा–पूरा ढक लें। • विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी द्वारा एक रेखा के बाहर स्थित बिंदु से उस रेखा के समानान्तर रेखा खींचने का प्रदर्शन करना। • स्केल तथा परकार की मदद से त्रिभुज की रचना करना। • कार्ड बोर्ड/मोटे कागज पर विभिन्न बंद आकृतियों के कट आउट बनाना तथा आकृतियों का ग्राफ पेपर पर अनुरेखन करना। • ग्राफ पेपर पर आकृति द्वारा घेरे हुए स्थान का इकाई वर्ग की गिनती कर (पूर्ण/आधा आदि) अनुमानित क्षेत्रफल ज्ञात करना। • चर्चा के माध्यम से विद्यार्थियों को आयत/वर्ग के क्षेत्रफल के सूत्र तक पहुँचने हेतु प्रोत्साहित करना। • समान्तर माध्य, बहुलक या मध्यिका के रूप में असमूहीकृत आंकड़ो का प्रतिनिधी मान ज्ञात करना। विद्यार्थियों को इन आंकड़ो को सारणी के रूप में लिखकर उसे दण्डारेख के रूप में प्रदर्शित करने हेतु प्रोत्साहित करना।	

• मौजूदा आँकड़ो से भविष्य की घटनाओं के लिए अनुमान लगाना। • उन स्थितियों की चर्चा जिसमें संभावना (Chance) शब्द का प्रयोग किया जा सके। जैसे – आज बारिश होने की कितनी संभावना (Chance) है, या किसी पासे को लुढ़काने में '4' अंक प्राप्त होने की क्या संभावना (Chance) है। • किसी त्रिभुज की दो भुजाओं की लंबाईयों का योग तीसरी भुजा से बड़ा होता है। इसके सत्यापन हेतु गतिविधि करना।	

कक्षा – VIII (गणित)

प्रस्तावित अध्यापन प्रक्रिया	अधिगम परिणाम (Learning Outcomes)
शिक्षार्थी को जोड़े/समूह/व्यक्तिगत तौर पर अवसर उपलब्ध कराते हुये, निम्नांकित हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए। • सभी संक्रियाओं में परिमेय संख्याओं के उपयोग के उदाहरण खोजना तथा इन संक्रियाओं में पैटर्न खोजना। • 3 अंको तक की संख्याओं के सामान्य रूप तथा बीजगणित की समझ द्वारा 2, 3, 4, – – – से भाग के नियम खोजना, जिसे पूर्व में पैटर्न के अवलोकन द्वारा किया गया था। • वर्ग, वर्गमूल, घन तथा घनमूल की संख्या में पैटर्न खोजना तथा पूर्णांको को घातांक के रूप में व्यक्त करने हेतु नियम बनाना। • विद्यार्थियों को ऐसी स्थिति उपलब्ध कराना जो उन्हें समीकरण बनाने हेतु प्रेरित करें तथा उन्हें उचित विधि द्वारा हल करने हेतु प्रोत्साहित करें। • वितरण **नियम** के पूर्व ज्ञान के आधार पर दो बीजीय व्यंजकों तथा बहुपदों का गुणा करना तथा विभिन्न बीजगणित सर्वसमिकाओं का मूर्त उदाहरणों की सहायता से सामान्यीकरण करना। • दो संख्याओं के गुणनखण्ड निकालने के ज्ञान के आधार पर उचित गतिविधि का उपयोग कर विद्यार्थियों को बीजीय व्यंजकों के गुणनखण्ड से परिचित कराना। • ऐसे संदर्भ विद्यार्थियों को उपलब्ध कराना जिसमें प्रतिशत का उपयोग होता है जैसे – छूट, लाभ, हानि , VAT, साधारण तथा चक्रवृद्धि ब्याज आदि। • साधारण ब्याज के बारंबार उपयोग से चक्रवृद्धि ब्याज के सूत्र का सामान्यीकरण करना।	शिक्षार्थी : 1. पैटर्न की मदद से परिमेय संख्याओं के योग, अंतर, गुणा, तथा भाग के गुणों का सामान्यीकरण कर सकता है। 2. दो परिमेय संख्याओं के बीच संभावित परिमेय संख्याएं ज्ञात कर सकता है। 3. 2, 3, 4, 5, 6, 9 तथा 11 के भाग के नियम का सत्यापन कर सकता है। 4. विभिन्न विधियों से संख्याओं का वर्ग, घन, वर्गमूल तथा घनमूल निकाल सकता है। 5. पूर्णांक घात के प्रश्न हल कर सकता है। 6. चरों का प्रयोग कर दैनिक जीवन से संबंधित प्रश्न तथा पहेलियां हल कर सकता है। 7. बीजीय व्यंजकों का गुणा कर सकता है। जैसे $(2\times -5)\ (3\times^2+7)$ 8. दैनिक जीवन के प्रश्नों को हल करने के लिए सार्वसमिकाओं का उपयोग कर सकता है। 9. लाभ हानि की स्थितियों में प्रतिशत की अवधारणा का प्रयोग छूट की गणना, VAT, चक्रवृद्धि ब्याज की गणना के लिए कर सकता है। जैसे – अंकित मूल्य तथा वास्तविक छूट दिये गये हों तो छूट प्रतिशत ज्ञात करता है अथवा क्रय मूल्य तथा लाभ दिया हो तो लाभ प्रतिशत ज्ञात कर सकता है। 10. समानुपात तथा व्युत्क्रमानुपात पर आधारित प्रश्न हल कर सकता है। 11. कोणों के योग के गुण का प्रयोग कर चतुर्भुज के कोणों से संबंधित प्रश्नों को हल कर सकता है। 12. समानान्तर चतुर्भुज के गुणों की पुष्टि कर सकता है तथा तर्क द्वारा उनके बीच संबंध स्थापित कर सकता है। 13. 3D आकृतियो को समतल जैसे कागज के पन्ने, श्याम पट आदि पर प्रदर्शित कर सकता है। 14. पैटर्न की मदद से आयलर संबंध की पुष्टि कर सकता है।

- विद्यार्थियों को ऐसी परिस्थितियां देना जिनमें एक राशि दूसरी पर निर्भर करती है। उन परिस्थितियों को पहचानना जिनमें दोनों राशियाँ की एक साथ वृद्धि होती है या एक राशि बढ़ती है तो दूसरी घटती है। जैसे– किसी वाहन की गति बढ़ने पर उसके द्वारा तय की जाने वाली दूरी में लगने वाला समय घट जाता है।
- विभिन्न चतुर्भुजों के कोणों तथा भुजाओं का मापना तथा उनके बीच संबंधों के पैटर्न की पहचान करना। विद्यार्थियों को पैटर्न के सामान्यीकरण के आधार पर स्वयं की परिकल्पना का निर्माण करने देना तथा उसकी पुष्टि उचित उदाहरणों द्वारा करना।
- समानान्तर चतुर्भुज के गुणधर्मों की पुष्टि करना तथा समानांतर चतुर्भुज की रचना, उनके विकर्णों की रचना, कोणों तथा भुजाओं के मापन आदि से संबंधित गतिविधि करना।
- दैनिक जीवन की 3D वस्तुओं को 2D रूप में प्रदर्शित करना जैसे – समतल पर बॉक्स का चित्र बनाना, कागज पर बोतल का चित्र बनाना।
- विभिन्न आकृतियों जैसे घनाभ, घन, पिरामिड, प्रिज्म आदि के जाल बनाना। इसी प्रकार जाल से विभिन्न आकृतियाँ बनाना तथा शीर्षों, कोरों तथा सतह के बीच संबंध स्थापित करना।
- विभिन्न प्रकार के चतुर्भुज की रचना का प्रदर्शन करना।
- ग्राफ पेपर पर समलम्ब चतुर्भुज तथा अन्य बहुभुज का अनुरेखन करना तथा विद्यार्थियों को इकाई वर्ग गिनकर अनुमानित क्षेत्रफल ज्ञात करने हेतु प्रोत्साहित करना।
- त्रिभुज तथा आयत (वर्ग) के क्षेत्रफल का प्रयोग करते हुए समलंब चतुर्भुज के क्षेत्रफल हेतु सूत्र स्थापित करना।
- विभिन्न 3D वस्तुओं जैसे घन, घनाभ तथा बेलन की सतहों की पहचान करना।

15. स्केल तथा परकार के प्रयोग से विभिन्न चतुर्भुजों की रचना कर सकता है।
16. समलंब चतुर्भुज तथा अन्य बहुभुज के क्षेत्रफल का अनुमान इकाई वर्ग/ग्राफ पेपर की मदद से लगा सकता है तथा सूत्र द्वारा उसकी पुष्टि कर सकता है।
17. बहुभुज का क्षेत्रफल ज्ञात कर सकता है।
18. घनाभीय तथा बेलनीय आकृति की वस्तुओं का पृष्ठीय क्षेत्रफल तथा आयतन ज्ञात कर सकता है।
19. दण्ड आरेख तथा पाई आरेख की रचना कर उनकी व्याख्या कर सकता है।
20. किसी घटना के पूर्व में घटित होने या उपलब्ध आँकड़ो के आधार पर भविष्य में होने वाली घटनाओं के घटित होने हेतु परिकल्पना बना सकता है।

• आयत, वर्ग तथा वृत के क्षेत्रफल के सूत्र का प्रयोग करते हुए घन, घनाभ के पृष्ठीय क्षेत्रफल हेतु सूत्र स्थापित करना। • इकाई घन की सहायता से दिए गए घन तथा घनाभ का आयतन ज्ञात करने का प्रदर्शन करना। • आँकड़ो का संचय, उनका समूह में सारणीयन कर दण्ड आरेख/पाई आरेख के रूप में प्रदर्शन करना। • बड़ी संख्या में एक समान पासे/सिक्के को उछालने की गतिविधि कर उससे बड़ी संख्या में घटनाओं के घटित होने की गणना करना तथा इसके आधार पर भविष्य की घटनाओं के लिए अवधारणा निर्मित करना।	

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिये (गणित)

गणित के अधिगमन के परिपेक्ष्य में आने वाली कठिनाईयों से उबरने के लिये, कुछ विद्यार्थियों को स्पर्श संबंधी आवश्यकता हो सकती हे, तो दूसरों को विशेषज्ञ तथा ज्यामितीय तथा गणना संबंधी उपकरण की। कुछ विद्यार्थियों को सरल भाषा तथा ज्यादा चित्रों की आवश्यकता होती हे तो दूसरों को ग्राफ, सारणी या दण्ड आरेख द्वारा आँकड़ो के व्याख्या में सहायता की आवश्यकता होती है। ऐसे विद्यार्थी हो सकते हैं जिन्हें मौखिक निर्देश के व्याख्या की आवश्यकता हो या मानसिक गणना करने में सहायता की आवश्यकता हो। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) का उपयोग इन कठिनाईयों को दूर करने तथा अमूर्त चिंतन हेतु किया जा सकता है।

विभिन्न प्रकार की असमर्थताओं वाले बच्चों की कुछ विशेष आवश्यकताएं होती है जिन्हें नीचे दिया जा रहा है। साथियों से साथ सीखने में इन बच्चों की मदद कर वांछित सीखने के परिणाम प्राप्त किये जा सकते है।

- <u>दृष्टिहीन बच्चों के लिये</u>
    - स्थानिक आवधारणाओं का विकास तथा स्थानिक अवधारणाओं के आपसी संबंधों की समझ का विकास।
    - त्रिविमीय वस्तुओं को द्विविमीय रूप में रूपांतरित करने की समझ।
    - गणित में प्रयुक्त विशेष चिन्हों की समझ।
    - गणितीय कथन के श्रव्य अभिलेखन (आडियों रिकार्डिंग) में कठिनाई जैसे समीकरण आदि।
    - गणितीय पाठ का ब्रेल लिपि में अनुलेखन तथा पठन में स्थान विषयक प्रबंध तथा कलर कोड के कारण कठिनाई।
    - नेमेथ या अन्य गणितीय ब्रेल लिपि सीखना।
- <u>श्रवण बाधित बच्चे</u> :–
    - भाषा संबंधी विकास में देरी के कारण सामान्य शब्दावली एवं गणित की तकनीकी शब्दावली का अभाव।
    - गणितीय प्रश्नों को समझाने के लिए अनेकों शब्दों का प्रयोग करने की समझ
    - अनेक अर्थों वाले शब्दों में विभेद करवाना जैसे *Interest, table, credit, angle, rate, volume, power, point.*
    - जब विद्यार्थी पढ़ रहा हो, तब गणितीय शब्दों में विभेद कर पाना (जैसे– tens तथा *tenths*, *sixty* तथा *Sixteen*)
    - प्रश्न हल करने हेतु आवश्यक संगत सूचना तथा दृष्टिकोण के चयन में संज्ञानात्मक रणनीति का सीमित प्रयोग।
    - क्रमबद्धता, चरण–वार प्रश्न हल करना तथा स्थानीय मान में कठिनाई।
    - गणितीय गणना, संख्या का व्युत्क्रमण, अनुकरण में कठिनाई आदि, संक्रिया संबंधी चिन्हों में भ्रम जैसे $ के लिए ×, तथा संक्रियाओं की क्रमबद्धता दोहराने में कठिनाई।
    - ज्यामितीय में विभिन्न आकृतियों की पहचान तथा दिशात्मकता संबंधी कठिनाई।
    - बीजगणित तथा पूर्णांको में अमूर्त अवधारणा आदि।
    - शाब्दिक प्रश्नों की समझ।

कक्षा–6वीं

सुझावात्मक शिक्षण प्रक्रियाएँ	अधिगम परिणाम (Learning Outcomes)
सीखनेवाले को जोड़ी में/समूहों में/व्यक्तिगत रूप से समावेशी व्यवस्था का अवसर प्रदान करते हुए निम्नांकित हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। • संवेदी अंगों के प्रयोग जैसे–देखना, स्पर्श करना, चखना, सूंघना, सुनना आदि द्वारा प्राकृतिक प्रक्रम तथा चारों ओर के परिवेश की खोजबीन। • प्रश्न उठाना एवं चिन्तन करना, चर्चा करना, उपयुक्त गतिविधियों की रूपरेखा बनाकर उन्हें क्रियान्वित करना, रोल प्ले, वाद–विवाद, आई. सी.टी. के उपयोग इत्यादि के द्वारा उत्तर की खोज करना। • गतिविधि, प्रयोग, सर्वेक्षण, क्षेत्र भ्रमण आदि के दौरान किए गए अवलोकनों का रिकार्ड रखना। • अभिलेखित आँकड़ों का विश्लेषण, निष्कर्षों की व्याख्या एवं अनुमान लगाना/सामान्यीकरण करना एवं निष्कर्षों को साथियों तथा वयस्कों के साथ बाँटना। • सृजनात्मकता का प्रदर्शन नवीन उपायों/विचारों, नवीन प्रतिदर्श, पैटर्न, तात्कालिक प्रदर्शन आदि की सहायता से करना।	**सीखने वाला** 1. वस्तुओं (पदार्थो) एवं जीवों को पहचानता है – वनस्पति रेशे, पुष्प आदि के अवलोकन योग्य विशेषताओं जैसे– बाह्य आकृति, बनावट, कार्य, गंध आदि के आधार पर। 2. गुणों, संरचना एवं कार्यो के आधार पर पदार्थों एवं जीवों में विभेदन करता है जैसे– तंतु (रेशे) एवं धागा, मूसला एवं रेशेदार जड़, वैद्युतीय सुचालक एवं कुचालक। 3. अवलोकन योग्य गुणों के आधार पर पदार्थों, जीवों एवं प्रक्रियाओं का वर्गीकरण कर सकता है जैसे–पदार्थ विलेय, अविलेय, पारदर्शी, पारभासी एवं अपारदर्शी, उत्क्रमणीय एवं अनुत्क्रमणीय परिवर्तन, वनस्पति को पौधे, झाड़ी, वृक्ष, रेंगने वाले, बेल (लताओं) के रूप में, वासस्थान के घटकों के रूप में जैव एवं अजैव घटक, गति के रूप में सरल, वृत्तीय एवं आवर्ती गति। 4. प्रश्नों के उत्तर ज्ञात करने के लिये सरल प्रकार की खोजबीन करता है जैसे– पशु चारे में पोषक तत्व कौन से हैं ? क्या समस्त भौतिक परिवर्तन उत्क्रमणीय होते हैं? क्या स्वतंत्रतापूर्वक लटका हुआ चुम्बक किसी विशेष दिशा में अवस्थित होता है? 5. प्रक्रियाओं एवं तथ्यों को कारणों से संबंधित करता है, जैसे– भोजन और हीनताजन्य रोग, वनस्पति एवं जन्तुओं का वासस्थान के साथ अनुकूलन, प्रदूषकों के कारण वायु की गुणवत्ता आदि। 6. प्रक्रियाओं एवं तथ्यों की व्याख्या करता है, जैसे– पादप रेशों का प्रसंस्करण, पौधों एवं जंतुओं में गति, छाया का बनना, समतल दर्पण से प्रकाश का परावर्तन, वायु के संघटन में विविधता, वर्मी कम्पोस्ट का निर्माण आदि।

सुझावात्मक शिक्षण प्रक्रियाएँ	अधिगम परिणाम (Learning Outcomes)
• सहयोग, सहभागिता, ईमानदारीपूर्ण प्रतिवेदन निर्माण, संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग जैसे मूल्यों को अंगीकृत तथा अर्जित करना एवं सराहना करना।	7. भौतिक राशियों का मापन कर एस.आई. (अंतर्राष्ट्रीय इकाइयों) में व्यक्त करता है जैसे– लंबाई। 8. नामांकित चित्र/फ्लो चार्ट द्वारा जीवों से संबंधित प्रक्रियाओं को बनाना, जैसे–पुष्प के भाग, संधियाँ, छनन प्रक्रिया, जल चक्र आदि। 9. अपने परिवेश की सामग्रियों का उपयोग कर मॉडल का निर्माण कर उनकी कार्य विधि की व्याख्या करता है जैसे– पिनहोल कैमरा, पेरिस्कोप, वैद्युतीय टार्च आदि। 10. वैज्ञानिक अवधारणाओं के सीखने का दैनिक जीवन में प्रयोग करता है। संतुलित भोजन हेतु भोज्य पदार्थों का चयन, पदार्थों को अलग करना, मौसम के अनुकूल कपड़ों का चयन, दिक्‌सूची के प्रयोग द्वारा दिशा का ज्ञान भारी वर्षा/अकाल की परिस्थितियों से निपटने की प्रक्रिया हेतु सुझाव आदि। 11. पर्यावरण की सुरक्षा हेतु प्रयास करता है जैसे– भोजन, जल एवं विद्युत के अपव्यय तथा अपशिष्ट पदार्थों के उत्पादन में कमी हेतु, वर्षा जल संग्रहण (rain water harvesting) अपनाने हेतु जागरूक करना, पौधों की सुरक्षा आदि। 12. सृजनात्मकता का प्रदर्शन करता है – डिजाइन बनाने, योजना बनाने एवं उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करने में। 13. मूल्यों जैसे–ईमानदारी, वस्तुनिष्ठता, सहयोग, भय एवं पूर्वाग्रहों से मुक्ति जैसे गुणों को प्रदर्शित करता है।

कक्षा–7वीं

सुझावात्मक शिक्षण प्रक्रियाएँ	अधिगम परिणाम (Learning Outcomes)
सीखनेवाले को जोड़ी में/समूहों में/व्यक्तिगत रूप से समावेशी व्यवस्था का अवसर प्रदान करते हुए निम्नांकित हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। • संवेदी अंगों के प्रयोग जैसे–देखना, स्पर्श करना, चखना, सूंघना, सुनना आदि द्वारा प्राकृतिक प्रक्रम तथा चारों ओर के परिवेश की खोजबीन। • प्रश्न उठाना एवं चिन्तन करना, चर्चा करना, उपयुक्त गतिविधियों की रूपरेखा बनाकर उन्हें क्रियान्वित करना, रोल प्ले, वाद–विवाद, आई.सी.टी. के उपयोग इत्यादि के द्वारा उत्तर की खोज करना। • गतिविधि, प्रयोग, सर्वेक्षण, क्षेत्र भ्रमण आदि के दौरान किए गए अवलोकनों का रिकार्ड रखना। • अभिलेखित आँकड़ों का विश्लेषण, निष्कर्षों की व्याख्या एवं अनुमान लगाना/सामान्यीकरण करना एवं निष्कर्षों को साथियों तथा वयस्कों के साथ बाँटना। • सृजनात्मकता का प्रदर्शन नवीन उपायों/विचारों, नवीन प्रतिदर्श, पैटर्न, तात्कालिक प्रदर्शन आदि की सहायता से करना।	**सीखने वाला** 1. पदार्थों व जीवों को पहचानता है जैसे– जन्तु रेशे, दाँतों के प्रकार, दर्पण और लैंस आदि सभी को उनके रंग–रूप, बनावट, कार्य आदि के आधार पर । 2. पदार्थों और जीवों के मध्य अंतर करता है जैसे– विभिन्न जीवों में पाचन, द्विलिंगी व एकलिंगी पुष्प, ऊष्मा के चालक व कुचालक, अम्लीय, क्षारीय व उदासीन पदार्थ, विभिन्न दर्पणों व लैंसों से प्रतिबिम्बों का बनाना आदि को उनके गुणधर्मों, संरचना व क्रियाविधि के आधार पर। 3. पदार्थों और जीवों को उनके गुणधर्मों/विशेषताओं के आधार पर वर्गीकृत करता है जैसे–पादप व जन्तु रेशे तथा भौतिक व रासायनिक परिवर्तन के आधार पर पदार्थों/जीवों का वर्गीकरण। 4. अपने प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए सरल गतिविधियाँ/जाँच पड़ताल कर निष्कर्ष निकालता है जैसे–क्या फूलों (रंगीन फूलों) के निकर्ष का उपयोग अम्लीय–क्षारीय सूचकों के रूप में किया जा सकता है? क्या हरे रंग से भिन्न रंग वाले पत्तों में भी प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया होती है? क्या सफेद रंग का प्रकाश बहुत से रंगों से मिलकर बनता है? आदि। 5. प्रक्रियाओं तथा घटनाओं का कारणों से संबंध स्थापित करता है जैसे– हवा की गति का वायु दाब से, मिट्टी के प्रकार का फसल उत्पादन से, मानव गतिविधियों से जल स्तर का कम होना आदि। 6. जंतु रेशों का प्रसंस्करण, ऊष्मा संचरण के तरीके, मानव व पादपों के विभिन्न अंग व तंत्र, विद्युत धारा के ऊष्मीय व चुम्बकीय प्रभाव आदि प्रक्रियाओं की व्याख्या करता है। 7. रासायनिक अभिक्रियाओं के शब्द समीकरण लिखता है जैसे–अम्ल और क्षार अभिक्रिया, संक्षारण, प्रकाश संश्लेषण, श्वसन आदि।

सुझावात्मक शिक्षण प्रक्रियाएँ	अधिगम परिणाम (Learning Outcomes)
• सहयोग, सहभागिता, ईमानदारीपूर्ण प्रतिवेदन निर्माण, संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग जैसे मूल्यों को अंगीकृत तथा अर्जित करना एवं सराहना करना।	8. मापन एवं गणना करता है जैसे–तापमान, धड़कन की गति, गतिमान पदार्थों की चाल, सरल लोलक की समय गति आदि। 9. नामांकित चित्र व फ्लो चार्ट बनाता है, जैसे–मानव व पादप अंग तंत्र, विद्युत परिपथ, रेशम के कीड़े के जीवन चक्र का प्रयोगशाला प्रतिरूपण आदि। 10. विभिन्न आरेख (ग्राफ) बनाता व व्याख्या करता है जैसे–दूरी, समय, वेग आदि। 11. अपने आस–पास उपलब्ध वस्तुओं से विभिन्न मॉडल का निर्माण व उनकी क्रियाविधि की व्याख्या करता है जैसे–स्टेथोस्कोप,एनीमोमीटर,इलेक्ट्रोमैगनेट, न्यूटन की कलर डिस्क आदि। 12. वैज्ञानिक अन्वेन्षणों की कहानियों की चर्चा तथा सराहना करता है। 13. अपने दैनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं में वैज्ञानिक अवधारणाओं को लागू कर उनसे सीखता है जैसे अम्लीयता से निपटना, मिट्टी की जाँच एवं उसका उपचार, संक्षारण को रोकने के विभिन्न उपाय, वर्धी प्रजनन के द्वारा कृषि, दो अथवा दो से अधिक विद्युत सेल का विभिन्न विद्युत उपकरणों में संयोजन, विभिन्न आपदाओं के दौरान व उनके बाद उनसे निपटना, प्रदूषित पानी के पुनःउपयोग हेतु उपचारित करने की विधियाँ सुझाना आदि। 14. पर्यावरण को सुरक्षित रखने हेतु प्रयत्नशील रहता है, जैसे–सार्वजनिक जगहों पर स्वच्छता प्रबंधन हेतु अच्छी आदतें, प्रदूषण उत्पन्न करने वाले कारकों का कम से कम उपयोग, मिट्टी के क्षरण को रोकने के लिए अधिकाधिक वृक्षारोपण, प्राकृतिक संसाधनों के कम से कम उपयोग करने के प्रति लोगों को संवेदनशील बनाना आदि। 15. सृजनात्मकता का प्रदर्शन करता है– डिजाइन बनाने,योजना बनाने एवं उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करने में। 16. मूल्यों जैसे–ईमानदारी,वस्तुनिष्ठता, सहयोग, भय एवं पूर्वाग्रहों से मुक्ति जैसे गुणों को प्रदर्शित करता है।

कक्षा 8वीं

सुझावात्मक शिक्षण प्रक्रियाएँ	अधिगम परिणाम (Learning Outcomes)
सीखनेवाले को जोड़ी में/समूहों में/व्यक्तिगत रूप से समावेशी व्यवस्था का अवसर प्रदान करते हुए निम्नांकित हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। • संवेदी अंगों के प्रयोग जैसे–देखना, स्पर्श करना, चखना, सूंघना, सुनना आदि द्वारा प्राकृतिक प्रक्रम तथा चारों ओर के परिवेश की खोजबीन। • प्रश्न उठाना एवं चिन्तन करना, चर्चा करना, उपयुक्त गतिविधियों की रूपरेखा बनाकर उन्हें क्रियान्वित करना, रोल प्ले, वाद–विवाद, आई.सी.टी. के उपयोग इत्यादि के द्वारा उत्तर की खोज करना। • गतिविधि, प्रयोग, सर्वेक्षण, क्षेत्र भ्रमण आदि के दौरान किए गए अवलोकनों का रिकार्ड रखना। • अभिलेखित आँकड़ों का विश्लेषण, निष्कर्षों की व्याख्या एवं अनुमान लगाना/सामान्यीकरण करना एवं निष्कर्षों को साथियों तथा वयस्कों के साथ बाँटना। • सृजनात्मकता का प्रदर्शन नवीन उपायों/विचारों, नवीन प्रतिदर्श, पैटर्न, तात्कालिक प्रदर्शन आदि की सहायता से करना।	**सीखने वाला** 1. वस्तुओं और जीवों में अन्तर करता है जैसे– प्राकृतिक एवं मानव निर्मित रेशे, असम्पर्क और सम्पर्क बल, तरल पदार्थ–विद्युत चालक और कुचालक, पौधों और जंतुओं की कोशिकाएँ पिण्डज और अण्डज जंतुओं को उनके गुणों, संरचना तथा कार्य के आधार पर। 2. विशेषताओं एवं गुणों के आधार पर सामग्रियों एवं जीवों का वर्गीकरण करता है जैसे–धातु और अधातु, खरीफ और रबी फसल, उपयोगी और अनुपयोगी सूक्ष्मजीव, लैंगिक और अलैंगिक प्रजनन, खगोलीय पिण्ड, समाप्त होने वाले एवं अक्षय प्राकृतिक संसाधन। 3. प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए सरल जाँच आयोजित करता है जैसे–दहन के लिए आवश्यक शर्तें क्या हैं? हम अचार और मुरब्बों में नमक और चीनी क्यों मिलाते हैं? क्या तरल पदार्थ समान गहराई पर समान दबाब डालते हैं? आदि 4. प्रक्रियाओं एवं घटनाओं को कारणों से संबंधित करता है जैसे–हवा में प्रदूषकों के कारण धूम–कोहरे का बनना, अम्ल वर्षा के कारण स्मारकों का क्षरण। 5. प्रक्रियाओं और घटनाओं का वर्णन करता है जैसे मनुष्य और जन्तुओं में प्रजनन; ध्वनि का संचरण तथा उत्पन्न होना, विद्युत प्रवाह के रासायनिक प्रभाव; बहुप्रतिबिम्ब बनाना, ज्वाला की संरचना। 6. रासायनिक अभिक्रियाओं के लिए शब्द समीकरण लिखता है जैसे–धातुओं और अधातुओं की हवा, पानी तथा अम्ल के साथ अभिक्रिया। 7. आपतन कोण और परावर्तन कोण का मापन करता है।

सुझावात्मक शैक्षिक कार्यक्रम	सीखने की संप्राप्ति (Learning Outcomes)
• सहयोग, सहभागिता, ईमानदारीपूर्ण प्रतिवेदन निर्माण, संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग जैसे मूल्यों को अंगीकृत तथा अर्जित करना एवं सराहना करना।	8. सूक्ष्मजीवों, प्याज की झिल्ली, मानव गाल की कोशिकाएँ आदि की स्लाइड्स तैयार करता है और उनसे संबंधित सूक्ष्म जानकारियों का वर्णन करता है। 9. कोशिका, आँख, मानव प्रजनन, अंगों एवं प्रायोगिक सेटअप आदि की संरचना का नामांकित चित्र, प्रवाह चार्ट बनाता है। 10. परिवेश से सामग्री का उपयोग करते हुए मॉडलों का निर्माण करता है और उनके कार्यों को बताता है जैसे – इकतारा, इलेक्ट्रोस्कोप, अग्नि शामक यंत्र आदि। 11. वैज्ञानिक अवधारणाओं को दैनिक जीवन की घटनाओं से जोड़ता है – जल का शुद्धीकरण, बायोडिग्रेडेबल और नॉन बायोडिग्रेडेबल कचरे को अलग करना, फसल उत्पादन में वृद्धि, विभिन्न कार्यों हेतु उपयुक्त धातुओं एवं अधातुओं का उपयोग, घर्षण को कम/ज्यादा करना। किशोरावस्था में चुनौतीपूर्ण मिथ और भ्रांतियाँ। 12. वैज्ञानिक खोजों की कहानियों की चर्चा और प्रशंसा करता है। 13. पर्यावरण की रक्षा का प्रयास करता है जैसे– संसाधनों का विवेकपूर्ण तरीकों से उपयोग, उर्वरकों और कीटनाशकों का नियंत्रित उपयोग, पर्यावरणीय खतरों से निपटने के सुझाव देता है। 14. सृजनात्मकता का प्रदर्शन करता है – डिजाइन बनाने, योजना बनाने एवं उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करने में। 15. मूल्यों जैसे – ईमानदारी, वस्तुनिष्ठता, सहयोग, भय एवं पूर्वाग्रहों से मुक्ति जैसे गुणों को प्रदर्शित करता है।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए (पर्यावरण अध्ययन एवं विज्ञान)

कुछ विद्यार्थियों को पर्यावरण अध्ययन तथा विज्ञान सीखते समय कक्षा के भीतर तथा बाहर आयोजित गतिविधियों एवं प्रयोगों में गतिशीलता तथा कुशलता के लिए सहयोग की आवश्यकता होती है। ऐसे विद्यार्थी जो अपनी बाधिता के कारण अधिगम सम्प्राप्ति स्तर तक नहीं पहुँच पाते हैं उनके लिए अनुकूलित तथा वैकल्पिक गतिविधियाँ, अनुकूलित उपकरण, आई.सी.टी. का उपयोग, किसी वयस्क या साथी का सहयोग, अतिरिक्त समय आदि दिए जाने से वे लाभान्वित होते हैं।

अतः निम्नलिखित स्थितियों हेतु अतिरिक्त देखभाल अपेक्षित है–

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए

- अमूर्त तथा कठिन अवधारणाएँ।
- ऐसी गतिविधियाँ जहाँ शारीरिक सुरक्षा की आवश्यकता हो।
- अधिक समय की आवश्यकता।
- बोर्ड पर चॉक से लिखना, प्रयोग प्रदर्शन, ग्राफ द्वारा प्रस्तुतीकरण तथा चित्र आदि जैसी देखकर समझे जाने वाली जानकारी।

श्रवणबाधित विद्यार्थियों के लिए

- अमूर्त शब्दों तथा अमूर्त अवधारणाओं के मध्य जुड़ाव, ज्ञान, विचार (जैसे – प्रकाश संश्लेषण, आवास स्थान, सूक्ष्म जीव आदि जिन्हें विद्यार्थी देखे बिना नहीं समझ सकते)।
- प्रयोगों का संचालन।
- ऐसे प्रश्नों को हल करने में कठिनाई होती है जहाँ एक आयाम की जगह एक से अधिक आयामों जैसे–आकार, आकृति, रंग आदि की तुलना की जाए।

मानसिक मंदता तथा बौद्धिक निःशक्तता

- विज्ञान की तकनीकी शब्दावली को समझना।
- विभिन्न अवधारणाओं के मध्य अर्थपूर्ण संबंधों को स्थापित करना (जैसे – दाब तथा बल के मध्य)।
- योजना बनाना, क्रियान्वयन करना, क्रमीकरण तथा सामान्यीकरण।
- अमूर्त अवधारणाओं को समझना।
- विज्ञान के प्रयोगों का उपयोग तथा संचालन करना।

कक्षा 6 सामाजिक विज्ञान

शिक्षार्थी को जोड़े/समूहों/व्यक्तिगत रुप में अवसर प्रदान कर प्रोत्साहित किया जाए (The learner be provided opportunity in pairs/groups/individually and encouraged to)

सुझाए गए शैक्षणिक प्रकियाएँ(Suggested Pedagogial Processes)	**अधिगम परिणाम** (Learning Outcome)
• धरती की गतियों को समझने के लिए आरेख, मॉडल और दृश्य–श्रव्य सामग्रियों का उपयोग करना। • खगोलीय घटनाओं को समझने के लिए तारों, ग्रहों, उपग्रह (चंद्रमा), ग्रहण आदि को माता–पिता/ शिक्षक/बड़े– बुजुर्ग के मार्गदर्शन में देखना। • अक्षांश और देशांतर को समझने के लिए ग्लोब का उपयोग करना। • स्थलमंडल, जलमंडल, वायुमंडल और जैवमंडल को समझने के लिए आरेख, चित्र, चार्ट आदि का उपयोग करना। • महाद्वीपों, महासागरों, समुद्र, भारत के राज्यों/संघशासित प्रदेशों, भारत और इसके पड़ोसी देश, भारत के भौतिक स्वरुप जैसे पहाड़ों, पठारों, मैदानों, रेगिस्तान, नदियों आदि की समझ बनाने के लिए नक्शे का उपयोग करना। • ग्रहण संबंधी मिथकों पर चर्चा करना।	**शिक्षार्थी ये कर पाएँगे –** 1. तारों, ग्रहों और उपग्रहों के बीच में अंतर करता है जैसे– सूर्य, पृथ्वी और चंद्रमा। 2. पहचानता है कि पृथ्वी एक अद्वितीय आकाशीय पिण्ड है क्योंकि उस पर जीवन संभव है और उसके जैव मण्डल में विविध क्षेत्र हैं। 3. दिन–रात और ऋतु परिवर्तन दर्शाता है। 4. सपाट सतह पर दिशाएँ पहचानता और दुनिया के नक्शे पर महाद्वीपों–महासागरों को पहचान पाता है। 5. अक्षांश और देशांतर, ध्रुव, भूमध्य रेखा, उष्णकटिबंधीय, भारत के राज्यों/संघ शासित प्रदेशों और दूसरे पड़ोसी देशों को ग्लोब और दुनिया के नक्शे में पहचानता है। 6. भारत के नक्शे पर पहाड़ों, पठारों, मैदानों, नदियों, रेगिस्तान आदि जैसे भारत की भौगोलिक विशेषताओं का पता लगाता है। 7. अपने आस–पास का मानचित्र–पैमाना, दिशा और रूढ़ प्रतीकों की मदद से बनाता और विशेषताओं को दिखाता है। 8. ग्रहण से संबंधित मिथकों पर आलोचनात्मक नजरिया विकसित कर पाता है। 9. विभिन्न प्रकार के स्रोत (पुरातात्विक, साहित्यिक इत्यादि) को इंगित करता है और इस अवधि के इतिहास के

• विभिन्न प्रकार के ऐतिहासिक स्रोतों के चित्रों पर चर्चा करना और समझना कि इतिहासकारों ने प्राचीन भारत के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए किनका उपयोग किया है। • मानचित्र गतिविधि का प्रयोग करना– शिकारी–संग्रहकों, खाद्य उत्पादक, हड़प्पा सभ्यता, जनपद, महाजनपद, बुद्ध और महावीर के जीवन से संबंधित स्थानों, साम्राज्य, भारत के बाहर कला और स्थापत्य–क्षेत्रों के केंद्र जिसके साथ भारत के संपर्क थे। • महाकाव्यों,रामायण,महाभारत,सिलप्पदिकारम, मणिमेकलै या कालीदास के कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथों का पता लगाना। • चर्चा करना–बौद्ध धर्म, जैनमत और अन्य दर्शनों की शिक्षाओं और आज उनकी प्रासंगिकता, प्राचीन भारत में कला एवं वास्तुकला का विकास–संस्कृति तथा विज्ञान के क्षेत्र में भारत का योगदान। • अभिनय करना (Role play) : विभिन्न ऐतिहासिक प्रकरणों पर जैसे –कलिंग युद्ध के बाद अशोक में बदलाव, उस समय के साहित्य में वर्णित घटनाएँ आदि। • परियोजना कार्य करना – राज्यों का उदय,गणसंघ व साम्राज्य का योगदान, संस्कृति के क्षेत्र में राजवंशों का योगदान–भारत के बाहर के क्षेत्रों के संपर्क में इन संपर्कों के प्रभाव पर प्रकाश डालने वाले परियोजनाओं पर कक्षा में चर्चा। • संग्रहालय की सैर करना – प्रारंभिक मानव बस्तियों की सामग्री अवशेष देखने के लिए–हड़प्पा और इन संस्कृतियों के बीच निरंतरता और परिवर्तन पर चर्चा करना।	पुनर्निर्माण में उनके उपयोग का वर्णन करता है। 10. भारत के मानचित्र पर महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों को ढूंढता है। 11. प्रारंभिक मानव संस्कृतियों की विशिष्टताओं को पहचानता है और उनके क्रमबद्ध विकास की व्याख्या कर पाता है। 12. महत्त्वपूर्ण राज्यों, राजवंशों के महत्वपूर्ण योगदान को सूचीबद्ध करता है जैसे– अशोक–शिलालेख, गुप्त सिक्कों, पल्लवों द्वारा स्थापित रथ मंदिर आदि। 13. प्राचीन काल में हुए विकास को समझता है और बताता है उदाहरण– शिकार एकत्रित करने के चरण, कृषि की शुरुआत, सिंधुघाटी के पहले के शहर जो एक ही समय पर अलग–अलग स्थान पर होने वाले विकास की व्याख्या करता है। 14. अलग–अलग समय के साहित्य में वर्णित मुद्दों, घटनाओं, व्यक्तित्व का वर्णन करता है। 15. भारत का दूसरे देशों के धर्म, कला, वास्तुकला आदि के क्षेत्र में संपर्कों के प्रभाव का वर्णन करता है। 16. संस्कृति और विज्ञान में भारत के महत्वपूर्ण योगदान बताता है जैसे खगोल विज्ञान, चिकित्सा, गणित और धातुओं के ज्ञान आदि। 17. विभिन्न ऐतिहासिक विकास से संबंधित जानकारी को संश्लेषित करता है। 18. प्राचीन काल के दौरान विभिन्न धर्मों और विचारों की प्रणाली के बुनियादी विचारों और मूल्यों का विश्लेषण करता है। 19. अपने चारों ओर के मानव विविधता के विभिन्न रूपों का वर्णन करता है। 20. अपने आस–पास के विभिन्न प्रकार की विविधता के प्रति एक स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करता है।

• विविधता, भेदभाव, सरकार और आजीविका आदि पर चर्चा। • परिवार, स्कूल, समाज आदि में लोगों के साथ उचित/अनुचित व्यवहार का उदाहरण प्रस्तुत करना। • ग्राम पंचायत या नगर पालिका/नगर निगम के कामों का प्रत्यक्ष अवलोकन और पाठ अध्यापन करना। (जगह के अनुसार) • समाज में शासन की भूमिका और एक परिवार के मामलों तथा एक गाँव/शहर के मामलों के बीच अंतर को समझाना। • व्यवसायों के संबंध में आसपास के इलाकों/गाँवों के मामले का अध्ययन करना।	21. भेदभाव के विभिन्न रूपों को पहचानता है और भेदभाव की प्रकृति और स्रोतों को समझता है। 22. समानता और असमानता के विभिन्न रूपों के बीच अंतर कर पाता है। 23. शासन की भूमिका, विशेष रूप से स्थानीय स्तर पर शासन की भूमिका का वर्णन करता है। 24. सरकार के विभिन्न स्तरों –स्थानीय, राज्य और केंद्र को इंगित करता है। 25. स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में ग्रामीण/शहरी और स्थानीय सरकारी निकायों के कामकाज की व्याख्या करता है। 26. ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विभिन्न व्यवसायों के कारकों को बता पाता है।

कक्षा–7 सामाजिक विज्ञान

शिक्षार्थी को जोड़े/ समूहों/ व्यक्तिगत रुप में अवसर प्रदान कर प्रोत्साहित किया जाए (The learner be provided opportunity in pairs/ groups/ individualy and encouraged to)

सुझाए गए शैक्षणिक प्रकियाएँ (Suggested Pedagogial Processes)	अधिगम परिणाम (Learning Outcome)
• अर्थपूर्ण स्पष्टीकरण और उपयुक्त संसाधनों का उपयोग करते हुए प्रमुख अवधारणाओं जैसे पारिस्थितिकी तंत्र, वातावरण, आपदाएँ, मौसम, जलवायु, जलवायु क्षेत्रों आदि को समझना। • पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं के बारे में उनके अवलोकन और अनुभवों पर चर्चा करना और साझा करना। उदाहरण विभिन्न पारिस्थितिक तंत्र/जलवायु क्षेत्रों में प्राकृतिक और मानव निर्मित वातावरण, वनस्पतियों और जीवों के घटकों, प्रदूषण के प्रकार, उनके परिवेश में ताजे पानी के स्रोत आदि। • ऐतिहासिक स्थानों/राज्यों, जलवायु क्षेत्रों और अन्य संसाधनों की पहचान करने के लिए दुनिया के नक्शे का उपयोग। • पृथ्वी की आंतरिक रचना विभिन्न प्रकारों के भू आकृतियों का निर्माण, समुद्र में पानी की गति आदि को समझने के लिए आरेख/मॉडल/दृश्य–श्रव्य सामग्रियों का उपयोग करना। • आस–पास से विभिन्न प्रकार की चट्टानों के नमूने को इकट्ठा करना और उसकी पहचान कराना। • भूकंप या अन्य आपदाओं के लिए नकली ड्रिल (Mock drill) में भाग लेना। • प्राकृतिक और मानव निर्मित दोनों कारकों पर विचार करना जो सूनामी, बाढ़, भूकंप आदि जैसी आपदाओं का कारण बनती हैं। इससे बचाव का पूर्वाभ्यास करना। • दुनिया के विभिन्न प्राकृतिक क्षेत्रों में लोगों के जीवन में समानताएँ और अंतरों की चर्चा कराना।	**शिक्षार्थी ये कर पाएँगे –** 1. आरेख में पृथ्वी के प्रमुख आंतरिक परतों चट्टानों के प्रकार, वायुमंडल की परतों को इंगित करता है। 2. विश्व मानचित्र या ग्लोब पर विभिन्न जलवायु क्षेत्रों का वितरण और सीमा निर्धारित करता है। 3. भूकंप, बाढ़, सूखे आदि आपदाओं की स्थिति में किए जाने वाले निवारक कार्यों को समझता है। 4. विभिन्न कारकों/घटनाओं के कारण स्थलाकृतियों के गठन का वर्णन करता है। 5. वायुमंडल की संघटन और संरचना बताता है। 6. पर्यावरण के विभिन्न घटकों और उनके बीच के संबंध का वर्णन कर पाता है। 7. अपने परिवेश में प्रदूषण में योगदान करने वाले कारकों का विश्लेषण करता है और इसे रोकने के उपायों की समीक्षा करता है। 8. जलवायु, भू–आकृति आदि विभिन्न कारकों के कारण वनस्पतियों और जीवों में विविधता होती हैं इसे समझता है। 9. आपदाओं और आपदाओं के कारकों को समझता है। 10. वायु, जल, ऊर्जा, वनस्पति और जीव जैसे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की जरूरत के प्रति संवेदनशीलता है। 11. अलग–अलग जलवायु क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन के बीच अंतरसंबंध को प्रदर्शित करता है। 12. कारकों का विश्लेषण करता है जो

• पुस्तकों व आस–पास उपलब्ध इतिहास के विभिन्न स्रोतों की पहचान – उदाहरण स्वरुप पांडुलिपियों / नक्शे / चित्रों / पेंटिंग / ऐतिहासिक स्मारकों / फिल्मों, जीवनी, नाटकों, दूरदर्शन, लोक नाटक आदि की मदद से पुराने समय की व्याख्या करना। • नए राजवंशों के उद्भव के बारे में जानना और इस समय के महत्वपूर्ण घटनाओं को एक समय सारणी में अंकित करना। • रजिया सुल्तान, अकबर आदि के समय की प्रमुख घटनाओं का अभिनय करना / नाटक करना। • मध्ययुगीन काल में समाज में हुए परिवर्तनों पर गौर करना और वर्तमान समय के साथ तुलना करना। • परियोजनाएँ तैयार करना – राजवंशों / राज्यों / जैसे खिलजियों, मुगल के प्रशासनिक सुधारों और उस समय की वास्तु शिल्प विशेषताओं आदि पर। • संतों के भजन, कीर्तन या कव्वाली के माध्यम से नए धर्मों व विचारों के आंदोलनों में योगदान करने वाले कारकों पर विचार करना, दरगाह / गुरुद्वारा / भक्ति या सूफी संतों से जुड़े मंदिर में जाना और विभिन्न धर्मों के मुख्य विचारों पर चर्चा करना। • लोकतंत्र, समानता, राज्य सरकार, जेंडर, मीडिया और विज्ञापन की अवधारणाओं पर चर्चा में भाग लेना। • संविधान, प्रस्तावना, समानता के अधिकारों और समानता के लिए संघर्ष के महत्व पर तस्वीर के साथ पोस्टर तैयार करना। • नक्शे में राज्य / केंद्रशासित प्रदेश की विधानसभा क्षेत्र को पहचानना। • नकली चुनाव और युवा सम्मेलन का आयोजन करना।	विशिष्ट क्षेत्रों के विकास को प्रभावित करते हैं। 13.इतिहास में विभिन्न अवधि का अध्ययन करने के लिए प्रयुक्त स्रोतों के उदाहरण प्रस्तुत करता है। 14.मध्यकाल के दौरान विभिन्न स्थानों में होने वाली महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं में आपसी संबंध देख पाता है। 15.आदिवासी, खानाबदोश चरवाहा और बंजारा आदि के आजीविका के पैटर्न और क्षेत्र के भौगोलिक स्थिति के बीच संबंध की व्याख्या करता है। 16.मध्य काल के दौरान सामाजिक–राजनैतिक और आर्थिक परिवर्तनों का विश्लेषण करता है। 17.खिलजी, तुगलक, मुगल आदि विभिन्न राज्यों में संचालित सैन्य नियंत्रण के लिए प्रशासनिक व्यवस्था और रणनीति का विश्लेषण कर पाता है। 18.विभिन्न शासकों की नीतियों के बीच तुलना कर पाता है। 19.उदाहरणों के साथ मंदिरों, मकबरों और मस्जिदों के निर्माण के लिए इस्तेमाल की जाने वाली शैली और तकनीक में विशिष्ट विकास का वर्णन करता है। 20.उन कारकों का विश्लेषण करता है जिससे नए धार्मिक विचार और आंदोलन (भक्ति और सूफी) उभरे। 21.भक्ति और सूफी संतों की कविता से तत्कालीन समाज के बारे में निष्कर्ष निकालता है। 22.लोकतंत्र में समानता के महत्व को स्पष्ट कर पाता है। 23.राजनैतिक समानता, आर्थिक समानता और सामाजिक समानता के बीच में अंतर करता है।

• मीडिया की भूमिका के बारे में वाद–विवाद (debate) आयोजित करना। • लोकतंत्र में समानता, बालिकाओं से भेदभाव जैसे–मुद्दों के बारे में गीतों और कविताओं के साथ अभिनय करना। • ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में रहने वाली बालिकाओं और महिलाओं के जीवन स्तर के बारे में मौखिक और लिखित रूप में विचारों को व्यक्त करना। • बेहतर समाज के लिए काम करने वाली महिलाओं के बारे में मौखिक और लिखित प्रस्तुतियाँ तैयार करना। • राज्य सरकार द्वारा चुनिंदा मुद्दों पर (जैसे–स्वास्थ्य, भोजन, कृषि, सड़क) किए गए कार्य के बारे में अखबार से कोलाज तैयार करना और स्थानीय विधायक द्वारा किए गए कुछ सार्वजनिक कार्यों की सूची तैयार करना। • जोड़ी या समूह में पानी और ऊर्जा को बचाने की आवश्यकता के बारे में परियोजना तैयार करना। • स्वच्छता, सार्वजनिक स्वास्थ्य और सड़क सुरक्षा के बारे में जागरुकता के लिए कार्यक्रम आयोजित करना। • अपने इलाके में राज्य सरकार के किसी भी कार्यालय (जैसे बिजली कार्यालय) का भ्रमण कराना और उसके कामकाज को देखना तथा संक्षिप्त रिपोर्ट तैयार करना। • परिभ्रमण के माध्यम से स्थानीय बाजारों के बारे में केस अध्ययन और परियोजनाएँ बनाना।	24.समानता के अधिकार के संदर्भ में अपने क्षेत्र के सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक मुद्दों की व्याख्या करता है। 25.स्थानीय सरकार और राज्य सरकार के बीच अंतर कर पाता है। 26.विधानसभा के चुनाव की प्रक्रिया का वर्णन करता है। 27.राज्य की विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र के मानचित्र पर अपना निर्वाचन क्षेत्र पहचानता है और स्थानीय विधायक का नाम जानता है। 28.समाज के विभिन्न वर्गों की महिलाओं से होने वाले भेदभावों के कारणों और परिणामों की व्याख्या कर पाता है। 29.समाज के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वाली महिलाओं की पहचान कर पाता है। 30.उचित उदाहरणों के साथ विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वाली महिलाओं पर मौखिक एवं लिखित रूप में विचार अभिव्यक्त कर पाता है। 31.समाचार पत्रों से उचित उदाहरण के साथ मीडिया के कामकाज की व्याख्या करता है। 32.विज्ञापन की रचना करता है। 33.विभिन्न प्रकार के बाजारों में अंतर करता है। 34.यह चिन्हांकित करता है कि कैसे माल विभिन्न बाजारों से गुजरता है।

कक्षा 8 सामाजिक विज्ञान

शिक्षार्थी को जोड़े/समूहों/व्यक्तिगत रुप में अवसर प्रदान कर प्रोत्साहित किया जाए (The learner be provided opportunity in pairs/groups/individualy and encouraged to)

सुझाए गए शैक्षणिक प्रकियाएँ (Suggested Pedagogial Processes)	अधिगम परिणाम (Learning Outcome)
• विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों जैसे भूमि, मिट्टी, पानी, प्राकृतिक वनस्पति, वन्यजीव, खनिज, बिजली संसाधन, उनके परिदृश्य में उद्योगों के प्रकार और वितरण को भारत और विश्व से संबंधित कर देखना। • पड़ोस/जिला/राज्य में किए गए विभिन्न खेती की प्रथाओं का पता लगाना और किसानों से चर्चा करना। • प्राकृतिक संसाधनों और उनके संरक्षण से परिचित होने के लिए तस्वीरें/समाचार कतरन/वीडियो का उपयोग करना, अन्य राज्यों/देशों के विभिन्न कृषि पद्धतियों से परिचित करना। • प्राकृतिक और मानव निर्मित संसाधनों के संरक्षण पर परियोजनाएँ विकसित करना। • जंगल की आग, भूस्खलन, औद्योगिक दुर्घटनाओं जैसी घटनाओं और नियंत्रण उपायों के लिए प्राकृतिक और मानव कारणों के बारे में सहपाठी के साथ चर्चा करना। • दुनिया के प्रमुख कृषि क्षेत्रों, औद्योगिक देशों/क्षेत्रों, आबादी के स्थानिक वितरण को समझने के लिए एटलस/मानचित्र का उपयोग करना।	**शिक्षार्थी ये कर पाएँगे –** 1. कच्चे माल, आकार और स्वामित्व के आधार पर विभिन्न प्रकार के उद्योगों को वर्गीकृत करता है। 2. अपने क्षेत्र/राज्य की प्रमुख फसलों, खेती के प्रकार और कृषि प्रथाओं का वर्णन कर पाता है। 3. जनसंख्या के असमान वितरण के कारणों को दुनिया के नक्शे के आधार पर विवेचन करता है। 4. जंगल की आग, भूस्खलन औद्योगिक आपदाओं और उनके जोखिम में कमी लाने के उपायों का वर्णन करता है। 5. दुनिया के नक्शे में महत्वपूर्ण खनिजों के वितरण का पता लगाता है जैसे कोयला, पेट्रोलियम आदि। 6. पृथ्वी पर प्राकृतिक और मानव निर्मित संसाधनों का असमान वितरण का विश्लेषण करता है। 7. सभी क्षेत्रों में विकास को बनाए रखने के लिए प्राकृतिक संसाधनों जैसे पानी, मिट्टी, जंगल आदि के न्यायपूर्ण उपयोग की विवेचना करता है। 8. उन कारकों का विश्लेषण करता है जिसके कारण कुछ देश खास फसलों के उत्पादन के लिए जाने जाते हैं, जैसे–गेहूँ, चावल, कपास, जूट आदि और इन देशों को दुनिया के नक्शे पर दर्शाता है। 9. दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों की खेती और उसके विकास के बीच अंतर संबंध को समझता है। 10. विभिन्न देशों/भारत/राज्यों की

- आधुनिक युग के व्यक्तियों और समुदायों के जीवंत अनुभवों की कहानी पढ़ना।
- घटनाओं एवं प्रक्रियाओं का कक्षा में चर्चा करना।

विभिन्न मुद्दों और घटनाओं पर सवाल उठाना जैसे 'क्यों इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय शासकों के बीच विवादों में खुद को शामिल करना आवश्यक महसूस किया?'

ऐतिहासिक महत्व की जगहों की यात्रा करना जो औपनिवेशिक प्रशासन के केन्द्र थे या भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के साथ जुड़े हैं।

'परियोजनाओं' और 'गतिविधियों' को शामिल करना जैसे–(अ)'गाँधीजी के अहिंसा पर विचार और भारत के राष्ट्रीय आंदोलन पर इसके प्रभाव' पर एक निबंध लिखना (ब) भारत की राष्ट्रीय आन्दोलन की महत्वपूर्ण घटना पर एक समयरेखा तैयार करना (स)'चौरी–चौरा' घटना पर एक अभिनय निभाने के लिए और (द) 'औपनिवेशिक काल के दौरान वाणिज्यिक फसल की खेती से सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्र' को भारत के मानचित्र में दर्शाना।

- विभिन्न आंदोलनों के इतिहास को समझने और पुनर्निर्माण के लिए देशी और ब्रिटिश दस्तावेजों *(British accounts)*] आत्मकथाएं, उपन्यास, दैनंदिनी, चित्रकारी, फोटोग्राफ, समकालीन लेखन, दस्तावेज, अखबार की रिपोर्ट, फिल्म, वृत्तचित्र और हाल के लेख जैसे स्रोतों से परिचित करना।
- शैक्षणिक रूप से अभिनव सवाल उठाना।

आबादी को स्तंभ आरेख द्वारा दर्शाता है।

11. आधुनिक काल को 'मध्ययुग' और 'प्राचीन' काल के – स्रोतों और भारतीय उप–महाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों में हुए व्यापक विकास के आधार पर अलग कर पाता है।
12. कैसे अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी सबसे प्रभावशाली शक्ति बन गई स्पष्ट कर पाता है।
13. औपनिवेशिक कृषि नीतियों के प्रभाव देश के विभिन्न क्षेत्रों में किस प्रकार अलग–अलग था यह स्पष्ट कर पाता है।
14. 19वीं शताब्दी में विभिन्न आदिवासी समाजों के रूप और पर्यावरण के साथ उनके संबंध का वर्णन करता है।
15. आदिवासी समुदायों के लिए औपनिवेशिक प्रशासन द्वारा बनायी गई नीतियों को समझता है।
16. 1857 के विद्रोह की उत्पत्ति, प्रकृति एवं प्रसार तथा इसके परिणाम की व्याख्या करता है।
17. पूर्व–मौजूदा शहरी केंद्रों और हस्तशिल्प उद्योगों की गिरावट और औपनिवेशिक काल के दौरान भारत में नए शहरी केंद्रों और उद्योगों के विकास का विश्लेषण करता है।
18. भारत में नई शिक्षा प्रणाली की व्याख्या करता है।
19. इन मुद्दों पर – जाति, महिला, विधवा पुनर्विवाह, बालविवाह, सामाजिक सुधार और औपनिवेशिक प्रशासन के कानूनों और नीतियों से संबंधित मुद्दों का विश्लेषण करता है।
20. कला के क्षेत्र में आधुनिक काल के दौरान होने वाले प्रमुख घटनाओं को दर्शाता है।
21. 1870 के दशक से आजादी तक में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की रूपरेखा बताता है।
22. राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण

	घटनाओं का विश्लेषण करता है।
• संविधान, संसद, न्यायपालिका और हाशिएकरण विचारों पर चर्चा करना। • चित्र और रेखाचित्र के साथ पोस्टर तैयार करना और भारत के संविधान प्रस्तावना, संसदीय सरकार, सत्ता विभाजन, संघीय प्रणाली के महत्व पर मौखिक और लिखित प्रस्तुतियाँ तैयार करना। कक्षा/स्कूल/घर/समाज में स्वतंत्रता और समानता और भाईचारे का विचार कैसे अभ्यास किया जा रहा है, इस बारे में चर्चा करना। • मौलिक अधिकारों और मौलिक कर्तव्यों के बारे में परियोजनाएँ (एकल, जोड़ी या समूह) तैयार करना। • राज्य सभा टी.वी. श्रृंखला, *संविधान* और *गाँधी, सरदार, डॉ बाबासाहेब अंबेडकर* जैसे फिल्म देखना और चर्चा करना। • राज्य के संसदीय क्षेत्र का मानचित्र में अवलोकन। • मॉडल आचार संहिता और युवा संसद (बाल संसद) के साथ एक नकली चुनाव आयोजित करना। • खुद के पड़ोस में मतदाताओं की सूची तैयार करना। • अपने ही इलाके में मतदान का महत्व बताना और जागरूकता अभियान चलाना। • अपने स्वयं के निर्वाचन क्षेत्र के सांसद द्वारा किए गए कुछ सार्वजनिक कार्यों का पता लगाना। • पहली सूचना रिपोर्ट (एफआईआर) फॉर्म की जांच करना। • अभियुक्तों के लिए न्याय के वितरण में न्यायाधीशों की भूमिका के बारे में, वर्णनात्मक और आलोचनात्मक लेखन के माध्यम से विचार व्यक्त करना।	23. भारत के संविधान के संदर्भ में अपने क्षेत्र के सामाजिक और राजनैतिक मुद्दों की व्याख्या करता है। 24. उपयुक्त उदाहरणों के साथ मौलिक अधिकार और मौलिक कर्तव्यों की विवेचना करता है। 25. किसी भी स्थिति में मौलिक अधिकार के महत्व और उनके उल्लंघन को समझता है। उदाहरण–बाल अधिकार। 26. राज्य सरकार और केन्द्र सरकार के बीच अंतर प्रकट करता है। 27. लोकसभा के चुनाव की प्रक्रिया का वर्णन करता है। 28. मानचित्र पर राज्य के निर्वाचन क्षेत्र को भारत के नक्शे में पहचानता है और स्थानीय लोकसभा सदस्य के नाम बता पाता है। 29. कानून बनाने की प्रक्रिया को समझता है।(घरेलू हिंसा अधिनियम – आर.टी.आई. अधिनियम, आर.टी.ई. अधिनियम आदि) 30. कुछ विशिष्ट मामलों का हवाला देकर भारत में न्यायिक प्रणाली के कामकाज को अभिव्यक्त करता है। 31. एक प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफआईआर)कैसे दर्ज किया जाता है, समझता और बता पाता है। 32. अपने क्षेत्र के वंचित वर्गों के हाशिए पर होने के कारणों और परिणामों की व्याख्या करता है। 33. पानी, स्वच्छता, सड़क, बिजली आदि जैसे सार्वजनिक सुविधाएँ उपलब्ध कराने में सरकार की भूमिका को पहचानता है और उनकी उपलब्धता की व्याख्या करता है।
महिला, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, धार्मिक/भाषाई अल्पसंख्यकों, दिव्यांग व्यक्तियों, विशेष जरूरतों वाले बच्चों, स्वच्छता श्रमिकों और अन्य वंचित वर्गों के मानव अधिकार उनका उल्लंघन, संरक्षण और प्रचार पर फोकस समूह	34 आर्थिक गतिविधियों को विनियमित करने में सरकार की भूमिका का वर्णन करता है।

चर्चा करना। परदे पर मैं कलाम हूँ (हिंदी फिल्म–2011) देखना और फिल्म पर चर्चा करना। भारत में बालश्रम, बाल अधिकार, और अपराधियों के न्याय प्रणाली के बारे में अभिनय का मंचन कराना। स्थानीय स्तर पर केंद्र सरकार के कार्यालय (उदाहरण–पोस्ट ऑफिस) का अवलोकन करना और एक संक्षिप्त रिपोर्ट तैयार करना। सार्वजनिक सुविधाएँ जैसे–पानी, स्वच्छता, बिजली की उपलब्धता में असमानता के कारणों पर साथियों के साथ अनुभव साझा करना। सरकार सार्वजनिक सुविधाएँ प्रदान करने के लिए जिम्मेदार क्यों होना चाहिए? इस बारे में एक वाद–विवाद (debate) का आयोजन करना। कानून और मुआवजे के प्रवर्तन में लापरवाही का एक उदाहरण – मामले के अध्ययन हेतु अखबार की कतरनों को शिक्षार्थियों के लिए प्रदान करना। आर्थिक गतिविधियों को नियमित करने में सरकार की भूमिका पर चर्चा करना जैसे– भोपाल गैस त्रासदी के कारण का विश्लेषण।	

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों हेतु (सामाजिक विज्ञान)

पर्यावरण अध्ययन और सामाजिक विज्ञान में सीखने के परिणामों को प्राप्त करने के लिए, कुछ छात्रों को टेप तैयार करने के लिए, बातचीत करने वाली पुस्तकें/डेजी पुस्तकों की पाठ (text) तक पहुँचने के लिए सहायक की आवश्यकता हो सकती है। ICT या भाषण जैसे वैकल्पिक संचार तरीकों के माध्यम से अपने विचारों को संवाद करने के लिए लिखित रूप में सहायता; सामग्री और गतिविधियों का अनुकूलन, दृश्य सूचना का प्रबंधन करने के लिए शिक्षा सामग्री या विभिन्न भौगोलिक अवधारणा और पर्यावरण को समझने के लिए सहायता करना।

आईसीटी या भाषण जैसे वैकल्पिक संचार तरीकों के माध्यम से अपने विचारों को संवाद करने के लिए लिखित रूप में सहायता

- सहकारी शिक्षा के माध्यम से किए गए परियोजनाओं और कार्यों के रूप में समूह की गतिविधियाँ, SEN के साथ छात्रों को सभी कक्षा गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने में सक्षम बनाती हैं।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) के लिए, स्पर्श आरेख/नक्शे, बोलने वाली किताबें, दृश्य–श्रव्य सामग्री, ब्रेल आदि जैसे संसाधनों का उपयोग किया जा सकता है। शैक्षणिक प्रक्रियाओं और दस्तावेजों में सीखने के परिणाम संपूर्ण नहीं हैं। शिक्षकों से अपेक्षित शैक्षिक प्रक्रियाओं को तैयार करने और उनका पालन करने की अपेक्षा की जाती है ताकि मूल्यांकन परिणामों को लगातार सुधार करने के लिए अपने छात्रों का मूल्यांकन किया जा सके।

दृष्टिबाधित बच्चों हेतु (For visually impaired children)

- भौगोलिक शब्दों (Terms) और अवधारणाओं सहित मौखिक सामग्री, उदाहरण के लिए, अक्षांश, देशांतर, दिशा आदि।
- आलेख और दृश्य विवरण जैसे नक्शा पठन, ग्राफ, आरेख, पेंटिंग, शिलालेख, प्रतीकों और स्मारकीय वास्तुकला आदि।
- पर्यावरण और अंतरिक्ष–भूमि, जलवायु, वनस्पति और वन्य जीवन, संसाधनों और सेवाओं के वितरण का अवलोकन करना।
- संदर्भ सामग्री जैसे वर्तनी सूची, अध्ययन प्रश्न, महत्वपूर्ण संदर्भ और अन्य जानकारी के छात्रों को विस्तृत, स्पर्श या उभरा हुआ प्रारूपों में प्रदान किया जा सकता है या उचित विरोधाभासों के साथ दोबारा तैयार किया जा सकता है।

अस्पष्ट सुनने वाले बच्चों हेतु (For hearing Impaired children)

- विशेष शब्दावली / तकनीकी शब्दों, अमूर्त अवधारणा, तथ्यों, तुलना, कारण–प्रभाव संबंधों और घटनाओं का कालक्रम आदि को समझना।
- विशेष रूप से इतिहास और नागरिक विज्ञान में भारी पाठ (heavy text) (पाठ्यपुस्तकों / स्रोत सामग्री) पढ़ना।
- पाठ से संबंध बनाना।

संज्ञानात्मक विकलांगता, बौद्धिक विकलांगता वाले बच्चों हेतु (For children with congnitive impairments Intellectual disability)

- लिखित कार्य, चित्र, चार्ट, आलेख और नक्शे तक पहुँच (विशेषकर संज्ञानात्मक प्रोसेसिंग समस्या वाले छात्र के लिए – (Visual spatial/visual processing/perceptual)
- थोक जानकारी (Bulk information) Is संबंधित जानकारी को निकालना, टेक्स्ट (text) अधिकता वाले विषय जैसे कि इतिहास, पठन कठिनाइयों के कारण छात्र के लिए एक चुनौती है।
- घटनाओं के अनुक्रम को याद रखना और उन्हें जोड़ना।
- अमूर्त अवधारणाओं को समझना और व्याख्या करना।
- पर्यावरण और समाज के साथ पाठ्यपुस्तकों में सामान्यीकरण और संबंधित जानकारी।